

राजस्थान टुडे

आज भी सोने की
चिड़िया है भारत

5

पीढ़ी दर पीढ़ी
चमकता सोना

7

जब जगमगा
उठता था जयपुर

16

शायरों की दिवाली और
दिवाली की शायरी

23

मेरे दीयों से रोशन सभी,
मेरे घर अंधेरा क्यों?

26

एक ही छत के नीचे निःशुल्क ईलाज-ऑपरेशन

हृदय रोग

- एन्जियोप्लास्टी
- एन्जियोग्राफी
- बाईपास सर्जरी
- वाल्व सर्जरी
- पेसमेकर

हड्डी रोग

- घुटना-कुल्हा प्रत्यारोपण
- जोड़ प्रत्यारोपण

गुर्दा एवं मूत्र रोग

- पथरी, प्रोस्टेट
- दूरबीन एवं लेजर ऑपरेशन
- अन्य गुर्दा व मूत्र रोग के ईलाज व ऑपरेशन

पेट व लिवर रोग

- विडियो गैस्ट्रोस्कोपी
- विडियो कॉलोनोस्कोपी
- ERCP
- बैन्डिंग एवं लिगेशन

स्त्री व शिशु रोग

- सामान्य व मुश्किल प्रसव
- दूरबीन द्वारा स्त्री बच्चेदानी के ऑपरेशन उपलब्ध
- नवजात शिशु उपचार
- शिशु शल्य चिकित्सा

शल्य चिकित्सा

- दूरबीन द्वारा पेट, आंतों, बच्चेदानी के ऑपरेशन
- पाईल्स, हर्निया, हाइड्रोसिल व अन्य ऑपरेशन

मस्तिष्क रोग

- न्यूरोसर्जरी एवं कमर के ऑपरेशन दूरबीन से उपलब्ध
- दिमाग एवं रीढ़ की हड्डी की सर्जरी

कान नाक गला

- कान रोग व ऑपरेशन
- नाक रोग दूरबीन द्वारा ऑपरेशन
- गला रोग, थायराईड, टॉन्सिल, कैंसर रोग,

दन्त एवं नैत्र रोग

- डेंटल कैंप
- एक्सट्रैक्शन
- डेंटल रूट कैंनाल
- डेंटल फिलिंग
- नैत्र रोग
- केटरेक्ट (मोतियाबिंद)

चर्म रोग

सेवाओं में विस्तार
प्रतिदिन
सुबह 10:00 बजे से
2:00 बजे तक

**MRI
CT Scan
(24X7)**

**ICU, ICCU,
NICU, PICU
सुविधा उपलब्ध**

**Sonography,
Digital X-Ray,
EEG, EMG, NCV,
ECG, 2D ECHO,
TMT, HOLTER**



RGHS

लाभार्थियों के लिए **निःशुल्क**
OPD परामर्श, दवाईयां, ऑपरेशन व जाँचे
24x7 आपातकालीन सेवा

Scan Me



LOCATION

कैंसर का ईलाज, हम हैं आपके साथ...

निःशुल्क रहने की व्यवस्था, आने जाने की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध

**कैंसर
PET CT SCAN
प्रतिदिन उपलब्ध**

**कैंसर रेडियोथेरेपी
(सिकाई)
प्रतिदिन उपलब्ध**

**कैंसर सर्जरी एवं
दूरबीन ऑपरेशन**

**कैंसर कीमोथेरेपी
कैंसर इन्फ्यूजियोथेरेपी**

**CT Guided Biopsy/
FNAC IHC
Mammography**

ECGS, RGHS, CGHS, Indian Oil, Railways, ESIC, Oil India, ONGC, HPCL, EIL व सभी इंडियन कम्पनी, TPA योजना में निःशुल्क ईलाज उपलब्ध



गोयल हॉस्पिटल

रेजीडेंसी रोड, जोधपुर (राज.)

www.goyalhospital.org



एस के जी कैंसर हॉस्पिटल

झालामण्ड, जोधपुर (झालामण्ड चौराहे से सिर्फ 3 कि.मी. दूरी पर)

www.skgcancerhospital.com

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें - 7412025320, 8769707913



RNI No. RAJHIN/2020/11458

वर्ष 5, अक्टूबर, 2025

प्रधान सम्पादक
दिनेश रामावत

राजनीतिक सम्पादक
सुरेश व्यास

सम्पादक
अजय अस्थाना

प्रबंध सम्पादक
राकेश गांधी

सह सम्पादक
बलवंत राज मेहता

रेखाचित्र
राजेंद्र यादव

संपादकीय कार्यालय
बी-4, फोर्थ फ्लोर, एम.आर. हाईट्स
महावीर कॉलोनी, भास्कर सर्किल,
रातानाड़ा, जोधपुर - 342011
फ़ोन नंबर - 8107800000
ईमेल - rajasthanodaya@gmail.com

सभी विवादों का निपटारा जोधपुर की सीमा
में आने वाली सक्षम अदालतों और फोरमों में
किया जाएगा।

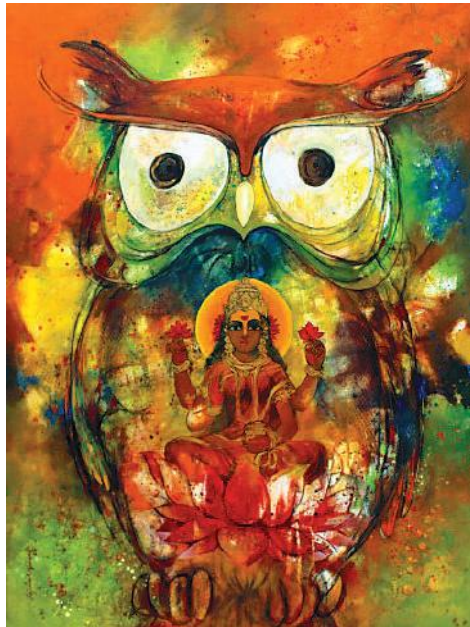
राजस्थान टुडे में प्रकाशित आलेख लेखकों की
राय है। इसे राजस्थान टुडे की राय नहीं समझा
जाए। राजस्थान टुडे के मुद्रक, प्रकाशक और
सम्पादक इसके लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। हमारी
भावना किसी वर्ग या व्यक्ति को आहत करना
नहीं है। विज्ञापनदाताओं के किसी भी दावे का
उत्तरदायित्व राजस्थान टुडे का नहीं होगा।

• मारवाड़ मीडिया प्लस के लिए मुद्रक एवं
प्रकाशक पूनम अस्थाना द्वारा बी-4, फोर्थ फ्लोर,
महावीर कॉलोनी, रातानाड़ा, जोधपुर-342011 से
प्रकाशित और डी.बी. कॉर्पोरेशन लिमिटेड, 01 पार्श्वनाथ
इंडस्ट्रीयल एरिया, रिलायंस वेयर हाउस के पास,
मोगरा कलां, जोधपुर-342802 में मुद्रित,
संपादक: अजय अस्थाना।

5 अपनी बात
आधुनिक युग का लक्ष्मी पूजन



12 तिजोरी से डिजिटल वॉलेट तक



30 जागे मन का आलोक; मिले प्रेम से दीपावली पर

33 सरल और सहज लक्ष्मी पूजन विधि एवं आरती

38 खुशियों की रोशनी, हृदयों से बचने के लिए...

40 राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष

5 कवर स्टोरी
आज भी सोने की चिड़िया है भारत



7 पीढ़ी दर पीढ़ी चमकता सोना

9 डिजिटल युग में खो गई दीप की लौ

13 परिवार की ओर लौटते कदम

15 हर उजाले की वजह है घर की लक्ष्मी

16 जगमगा उठता था जयपुर

17 परम्पराओं की लौ से रोशन मेवाड़

19 ओलों, अलार्म व अधिकारियों की दीपावली

20 “टैसूरा टैसूरा घंटा बजइयो, ...”

21 शायरों की दीवाली और दीवाली की शायरी

26 मेरे दीयों से रोशन सभी,
मेरे घर अंधेरा क्यों?

28 डिजिटल देवता: एआइ के नए अवतार



दिनेश रामावत
प्रधान सम्पादक

आधुनिक युग का 'लक्ष्मी पूजन'

हर साल दीपावली पर भारत में सोना-चांदी की चमक बढ़ती है, पर इस बार इसका वैश्विक अर्थ भी बदल गया है। मॉस्को में हुए सम्मेलन ने स्वर्ण लेन-देन को डॉलर के विकल्प के रूप में प्रस्तुत कर नई आर्थिक क्रांति की आहट दी है—यह दीपावली सचमुच स्वर्ण युग की प्रस्तावना बन सकती है।

ब्रिक्स देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका) ने काफी समय पहले से यह विचार रखा था कि दुनिया को एक "वैकल्पिक आर्थिक ढांचा" चाहिए, जो पश्चिमी मुद्रा नियंत्रण, विशेष रूप से डॉलर के वर्चस्व से मुक्त हो। मॉस्को में आयोजित इस सम्मेलन में रूस ने इसी विचार को ठोस आकार दिया। रूस ने घोषणा की कि वह एक "कीमती धातु विनिमय मंच" स्थापित करेगा, जहां लेन-देन सोना, प्लेटिनम, हीरे और दुर्लभ धातु में किया जा सकेगा।

इसका अर्थ यह हुआ कि अब देश, विशेष रूप से ब्रिक्स सदस्य अपने व्यापारिक भुगतान के लिए डॉलर या पश्चिमी वित्तीय प्रणाली -स्विफ्ट पर निर्भर नहीं रहेंगे। रूस ने यह स्पष्ट कर दिया है कि नई व्यवस्था "वास्तविक संपत्ति" पर आधारित होगी, न कि "कागजी मुद्रा" पर।

अमेरिकी डॉलर पिछले अस्सी वर्षों से दुनिया की रिजर्व करेंसी है। यानी अंतरराष्ट्रीय व्यापार, तेल लेन-देन, और बैंकिंग का अधिकांश हिस्सा डॉलर में ही होता है। यह स्थिति अमेरिका को वैश्विक स्तर पर असाधारण आर्थिक और राजनीतिक शक्ति देती है। लेकिन अब ब्रिक्स का यह स्वर्ण-आधारित मॉडल उस वर्चस्व को धीरे-धीरे कमजोर कर सकता है।

रूस की यह पहल दो कारणों से रणनीतिक है:

1. प्रतिबंधों से बचाव: पश्चिमी देशों द्वारा रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों के बाद, मॉस्को ने वैकल्पिक आर्थिक रास्ते खोजने शुरू किए थे।
2. विश्वसनीय मुद्रा: सोना और धातुएं ऐसी संपत्तियां हैं जिनकी "अंतरराष्ट्रीय स्वीकृति" किसी देश की नीतियों पर निर्भर नहीं करती।

यानी यह मंच डॉलर पर आधारित बैंकिंग नेटवर्क की जगह ऐसी प्रणाली बनाएगा जो "भौतिक संपत्ति" पर खड़ी हो, जो किसी राजनीतिक दबाव या अमेरिकी सेंट्रल बैंक के निर्णय से प्रभावित नहीं हो।

भारत के लिए यह कदम बेहद दिलचस्प और निर्णायक दोनों हैं। एक ओर, भारत ब्रिक्स का एक प्रमुख सदस्य है, जिसने 'वैश्विक दक्षिण' की आवाज को आर्थिक ताकत देने में अग्रणी भूमिका निभाई है। दूसरी ओर, भारत की पूरी विदेशी व्यापार प्रणाली अभी भी बड़े पैमाने पर डॉलर पर निर्भर है।

इसके कई लाभ हो सकते हैं। भारत स्वर्ण आधारित भुगतान प्रणाली का उपयोग कर अपनी ऊर्जा आयात बिल को स्थिर कर सकता है। रूस, ईरान और अफ्रीका के देशों के साथ व्यापार में डॉलर की कमी का बोझ घटेगा। भारतीय रुपये की स्थिरता को अप्रत्यक्ष समर्थन मिल सकता है, क्योंकि सोने पर आधारित भुगतान तंत्र मुद्रा उतार-चढ़ाव से अपेक्षाकृत सुरक्षित रहेगा। वहीं संभावित चुनौतियां भी होंगी। अमेरिका और यूरोपीय संघ भारत पर दबाव बना सकते हैं कि वह इस वैकल्पिक प्रणाली में आक्रामक रूप से शामिल न हो। भारत को अपने रिजर्व मैनेजमेंट और विदेशी विनिमय नीतियों को पुनर्गठित करना पड़ेगा। तकनीकी और वित्तीय ढांचे—जैसे डिजिटल सोना, ब्लॉकचेन आधारित भुगतान को मजबूत बनाना होगा।

आज जब हम दीपावली पर सोना खरीदते हैं, तो यह केवल धार्मिक या



पारंपरिक कर्मकांड नहीं होता। यह हमारे मन में एक "विश्वास" की पुनः पुष्टि होती है कि परिवर्तनशील समय में भी "धन" का स्थायी रूप वही है, जो मिट्टी की तरह धरती से जुड़ा हो।

रूस का यह कदम इसी सोच को वैश्विक स्तर पर मूर्त रूप देता दिख रहा है। यह एक तरह से आधुनिक युग का 'लक्ष्मी पूजन' है, जहां समृद्धि को डॉलर की मुद्रास्फुरी से नहीं, बल्कि वास्तविक धातु

की ठोस चमक से जोड़ा जा रहा है।

बीसवीं सदी की शुरुआत तक, दुनिया गोल्ड स्टैंडर्ड पर चलती थी। यानी हर देश की मुद्रा एक निश्चित मात्रा के सोने पर आधारित होती थी। लेकिन 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन ने डॉलर को सोने से अलग कर दिया, और "फिएट करेंसी" का युग शुरू हुआ। अब ब्रिक्स का यह मॉडल उसी "स्वर्ण युग" की वापसी जैसा है, फर्क बस इतना है कि अब यह किसी एक देश नहीं, बल्कि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था की ओर बढ़ता कदम है।

हालांकि यह बदलाव रातोंरात नहीं होगा। डॉलर अभी भी सबसे मजबूत मुद्रा है, और पश्चिमी बैंकिंग सिस्टम में दशकों का विश्वास जमा है। लेकिन अगर ब्रिक्स अपने नए मंच को सफल बनाता है, तो 2030 तक वैश्विक व्यापार का बड़ा हिस्सा "मल्टी-करेंसी" या "मेटल-सेटलमेंट" मॉडल में स्थानांतरित हो सकता है।

भारत ने पहले ही संकेत दे दिए हैं कि वह "मुद्रा विविधता" और "विकेंद्रीकृत भुगतान प्रणाली" का समर्थन करता है। हाल ही में भारतीय रिजर्व बैंक ने सोने आधारित डिजिटल बॉन्ड और ई-रूपए जैसे प्रयोग किए हैं। इसलिए यदि ब्रिक्स का स्वर्ण मंच भारत के लिए व्यवहारिक लाभ दे, तो नई दिल्ली इसमें सक्रिय भूमिका निभा सकती है। इसके साथ ही भारत को यह संतुलन भी साधना होगा कि अमेरिका और पश्चिमी साझेदारों के साथ उसके संबंध प्रभावित न हों। एक संभावना यह भी है कि भारत "हाइब्रिड मॉडल" अपनाए, जहां डॉलर और स्वर्ण दोनों समानांतर भुगतान माध्यम के रूप में मौजूद रहें। इस बार की दीपावली केवल घर-आंगन की नहीं, बल्कि आर्थिक सोच की भी रोशनी ला रही है। सोने के सिक्के, चांदी के दीपक, और वैश्विक मंच पर उठता "स्वर्ण मुद्रा का विचार", तीनों एक साझा अर्थ की ओर इशारा करते हैं:

समृद्धि का भविष्य केवल मुद्रा में नहीं, बल्कि विश्वास में छिपा है।

जैसे दीप जलाने से अंधकार मिटता है, वैसे ही यह नई आर्थिक व्यवस्था उस वित्तीय अंधकार को मिटाने की कोशिश है, जो दशकों से डॉलर वर्चस्व की छाया में छिपा था। मॉस्को से निकली यह "स्वर्ण चिंगारी" केवल रूस की रणनीति नहीं, बल्कि एक नए युग का संकेत है, जहां शक्ति का केंद्र पश्चिम से हटकर बहुध्रुवीय और वास्तविक मूल्य आधारित अर्थव्यवस्थाओं की ओर बढ़ रहा है।

भारत जैसे देश के लिए यह अवसर भी है और चुनौती भी।

यदि भारत अपनी पारंपरिक स्वर्ण संस्कृति को आधुनिक तकनीक और रणनीति से जोड़ सके, तो यह नई व्यवस्था उसके लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में बड़ा कदम साबित हो सकती है। दिवाली की रात जब घरों में दीप जलेंगे, तो शायद यह सोच भी मन में चमके, कहीं यह वैश्विक अर्थव्यवस्था भी अपनी नई "दीपावली" मना रही है, जहां सोने की रौशनी में विश्व की वित्तीय व्यवस्था नया जन्म ले रही है।

आज भी सोने की चिड़िया है भारत

हम बचपन से सुनते आए हैं कि भारत 'सोने की चिड़िया' था। पर यह समृद्धि कहाँ से आती थी? यह समझ लेना जरूरी है कि हमारे देश की असली आर्थिक ताकत न तो सरकारी खजाने में है, न ही बड़े-बड़े बैंकों में, बल्कि हर भारतीय घर की महिला की बचत, समझ और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता में छिपी है। जानिए कैसे उनका रखा हुआ छोटा सा सोना आज भी देश की आर्थिक स्थिरता की सबसे मजबूत नींव है और क्यों दुनिया की कोई भी वित्तीय योजना इस सांस्कृतिक विश्वास को तोड़ नहीं सकती।



राकेश गांधी
वरिष्ठ पत्रकार

भा रत सोने की चिड़िया था, है और रहेगा।' यह केवल एक पुरानी उपमा नहीं है, बल्कि हमारी आंतरिक समृद्धि और सांस्कृतिक ताकत का वास्तविक अहसास है। सदियों से भारत ने अपनी भौगोलिक, आर्थिक और सामाजिक पहचान के दम पर विश्व में अपनी अलग छवि बनाई। लेकिन यदि गहराई में देखें, तो पाएंगे कि भारत की सबसे स्थायी ताकत कोई खदान, बैंक रिज़र्व या औद्योगिक क्षमता नहीं, बल्कि हर घर की स्त्री की सोच, समझ और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता रही है। यही वह शक्ति है जिसने भारतीय परिवारों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाए रखा और भारत को आंतरिक समृद्धि दी। यह एक ऐसी व्यवस्था है जो सदियों के अनुभव और व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित है, जिसे आधुनिक अर्थशास्त्र अक्सर समझ नहीं पाता।

सोने की नींव पर टिकी आंतरिक समृद्धि

ये सही है कि भारतीय इतिहास सोने और धातुओं की प्रचुरता के कारण ही समृद्ध रहा। प्राचीन काल में सोने का प्रयोग केवल आभूषण तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सामाजिक प्रतिष्ठा, व्यापारिक लेन-देन और धार्मिक अनुष्ठानों का हिस्सा रहा। एक तरह से सोना हमारी अर्थव्यवस्था की धुरी था। विदेशी यात्री और व्यापारियों ने सदियों से भारत की समृद्धि और सोने की प्रचुरता का उल्लेख किया। चाहे वह मार्को पोलो हों या इब्न बतूता, सभी ने भारत को अतुलनीय संपदा वाला देश बताया था। लेकिन यही सोना जब घरों की तिजोरियों और महिलाओं के हाथों में सुरक्षित रहता था, तब इसकी वास्तविक शक्ति और स्थिरता सामने आती थी। यह संपत्ति का विकेंद्रीकरण था, जो किसी सत्ता या बैंक के नियंत्रण में नहीं था।

हर घर में रखे गहनों और सिक्कों ने परिवार को कठिन परिस्थितियों में भी मजबूती दी। यह केवल निवेश नहीं, बल्कि आर्थिक सुरक्षा, स्वायत्तता और भविष्य की व्यावहारिक योजना थी। यह सुरक्षा-जाल बुनता था, ताकि अकाल, युद्ध या राजनीतिक उथल-पुथल के दौरान भी परिवार का जीवनयापन सुनिश्चित रहे। यही कारण है कि भारत ने सदियों तक विभिन्न आक्रमणों, अकालों और संकटों के बावजूद अपनी आंतरिक स्थिरता बनाए रखी। हमारी पारिवारिक अर्थव्यवस्था का लचीलापन इसी पारंपरिक बचत में निहित था।

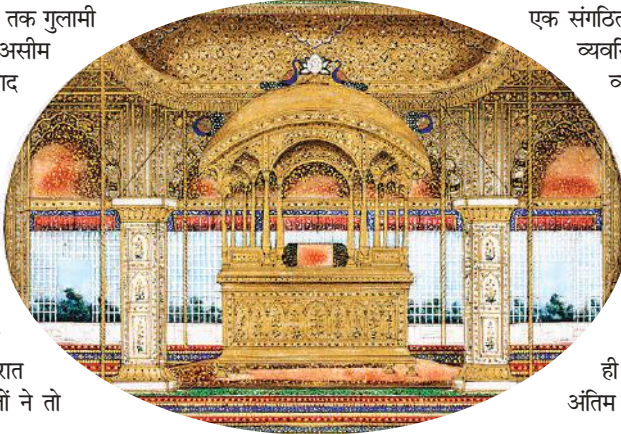


■ भारतीय परिवारों की आर्थिक संरचना में महिलाओं की भूमिका हमेशा से अनमोल और अदृश्य रही है। उन्होंने परिवार की देखभाल के साथ-साथ आर्थिक सुरक्षा की नींव भी रखी। पुरुषों द्वारा कमाई गई आय का एक बड़ा हिस्सा, अक्सर महिलाओं की सलाह और प्रबंधन से, बचत के रूप में सुरक्षित रखा जाता था। प्रत्येक चूड़ी, हर मंगलसूत्र, गहना या सिक्का केवल आभूषण नहीं था, बल्कि यह संकट के समय सहारा, सामाजिक सम्मान और भविष्य की सुरक्षा का प्रतीक रहा। इसे 'स्त्री-धन' कहा गया, जिस पर महिला का पूर्ण अधिकार होता था। यह उसे एक ऐसी आर्थिक शक्ति प्रदान करता था जो किसी भी संकट में उसके और उसके बच्चों के काम आ सके।

■ भारतीय समाज में यह परंपरा रही है कि बेटियों को विवाह के समय सोना दिया जाए। यह न केवल उनकी जीवन सुरक्षा का प्रतीक है, बल्कि संकट के समय उनके लिए आर्थिक सहारा और आत्म-सम्मान भी बनता है। कई परिवार अपनी सीमित आय में भी छोटी-छोटी बचत करके सोना जोड़ते हैं। कभी यह छोटी किस्में में होता है, कभी त्योहारों के अवसर पर और कभी तिजोरियों में सुरक्षित रखा जाता है। यह व्यावहारिक समझ, बचत का अनुशासन और लंबी अवधि की योजना ही भारत की आंतरिक समृद्धि और स्थिरता की असली वजह है। यह दर्शाता है कि सोने को खरीदने का निर्णय केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि अत्यधिक तार्किक और दूरदर्शी होता है। सबसे बड़ी बात तो ये है कि ये व्यवस्था आज भी भारतीय समाज में कायम है।

लूट का दंश और अपार संपदा का आकर्षण

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि भारत ने सदियों तक गुलामी का दंश झेला। इसकी मुख्य वजह यहां की असीम सम्पन्नता थी। मुगलों से पहले और उनके बाद तक कई समूहों ने भारत पर आक्रमण किए, जिसका प्राथमिक उद्देश्य केवल राजनीतिक वर्चस्व नहीं, बल्कि यहां के अक्षय खजाने की लूट थी। महमूद गजनवी का सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण हो या नादिर शाह द्वारा दिल्ली से तख्त-ए-ताऊस (मयूर सिंहासन) और कोहिनूर हीरा जैसी अमूल्य निधियों की लूट। ये सभी घटनाएं प्रमाणित करती हैं कि भारत धन, विशेषकर सोने, चांदी और जवाहरात के मामले में कितना अधिक समृद्ध था। अंग्रेजों ने तो



एक संगठित नीति के तहत भारत के संसाधनों का व्यवस्थित शोषण किया। राजा-महाराजाओं के व्यक्तिगत खजानों से लेकर मंदिरों और व्यापारिक मार्गों तक की लूट ने देश की समृद्धि को छिन्न-भिन्न कर दिया। लेकिन यही वह बिंदु है जहां घर की आंतरिक व्यवस्था की शक्ति सामने आई। जब राजकीय खजाने खाली हुए, तब भी आम आदमी के घरों में स्त्रियों द्वारा सुरक्षित रखा गया सोना, यानी पारिवारिक पूंजी बची रही। यह पूंजी ही राष्ट्र की मूलभूत आर्थिक स्थिरता का अंतिम गढ़ बनी।

भरोसा, सम्मान व सुरक्षा का प्रतीक

■ भारत में सोने का महत्व केवल निवेश या आभूषण तक सीमित नहीं है। यह भरोसा, सम्मान और पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षा का प्रतीक है। आर्थिक दृष्टि से भी सोना भारतीय घरों



की वित्तीय स्थिरता का आधार रहा है। पारंपरिक दृष्टि से घर की महिलाएं इसे बचत, सुरक्षा और परिवार के संकट मोचन के रूप में देखती हैं।

■ यह एक ऐसा निवेश है जो समय के साथ मूल्यवान होता है और कभी पूरी तरह खोता नहीं है। इतिहास गवाह है कि जब मुद्राएं विफल हुई हैं, शेयर बाजार गिरे हैं, और बैंक दिवालिया हुए हैं, तब भी सोने ने अपना मूल्य बनाए रखा है। यही कारण है कि भारत के घरों में सोने की अधोषित संपत्ति बहुत बड़ी है। इसीलिए कहा जाता है कि यह दुनिया के कुछ सबसे बड़े देशों के संयुक्त सरकारी सोने के भंडार से भी अधिक हो सकती है। विभिन्न सर्वेक्षणों और आंकड़ों के अनुसार, भारतीय घरों में रखा सोना देश के केंद्रीय बैंक रिजर्व से कई गुना अधिक है। इस संपत्ति का भले ही कोई सरकारी रिकॉर्ड नहीं हो, पर यह परिवार की निजी और पारंपरिक सुरक्षा का हिस्सा है, जिस पर उन्हें सबसे अधिक भरोसा है। यह घरेलू सोना वास्तव में भारत का सबसे बड़ा 'गोपनीय' आर्थिक बफर है।

औपचारिक अर्थव्यवस्था की चुनौती

■ आज के समय में भी घर की महिलाएं अपने परिवार की आर्थिक सुरक्षा के लिए सोने को प्राथमिकता देती हैं। यह आदत वित्तीय साक्षरता की कमी नहीं, बल्कि पिछली पीढ़ियों के कड़वे अनुभवों पर आधारित है। सरकार ने भी सोने को अर्थव्यवस्था में लाने के प्रयास किए हैं। उदाहरण के लिए, स्वर्ण मुद्रिकरण योजना और सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड जैसी योजनाओं ने घरों के सोने को बैंक और वित्तीय चैनलों में लाने का अवसर दिया है।

■ इन पहलों का उद्देश्य केवल सोने का औपचारिक वित्तीय उपयोग नहीं था, बल्कि आर्थिक तरलता बढ़ाना और भारत की वित्तीय स्थिरता को मजबूती देना भी था। हालांकि, इसके लिए जनता का विश्वास और परंपरा की आदतें भी महत्वपूर्ण रही हैं। यह सोना भारतीय स्त्री के लिए लक्ष्मी का स्वरूप और सामाजिक सम्मान का प्रतीक है। सरकारी योजनाओं में निवेश पर, इसे वापस अपनी मूल भौतिक अवस्था और डिजाइन में प्राप्त करने की अनिश्चितता बनी रहती है। जब तक सरकारें इस भावनात्मक और सांस्कृतिक कारक को नहीं समझतीं और इसे 'सिर्फ एक कमोडिटी' के रूप में देखना बंद नहीं करतीं, तब तक घर की तिजोरियां केंद्रीय बैंक की तिजोरियों से अधिक विश्वसनीय बनी रहेंगी। यहीं पर पारंपरिक बुद्धिमत्ता आधुनिक अर्थशास्त्र को चुनौती देती है।

वैश्विक संकटों में ताकत का प्रमाण

■ भारत में सोने का महत्व केवल घरेलू नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय है। विश्व के कुल सोने की मांग में भारत की हिस्सेदारी हमेशा महत्वपूर्ण रही है। यह प्रवृत्ति दशाती है कि जहां पश्चिमी देश वित्तीय अस्थिरता, मंदी और मुद्रास्फीति के दौरान बॉन्ड या डॉलर को सुरक्षित आश्रय मानते हैं, वहीं भारतीय परिवार सदियों से सोने को ही सबसे भरोसेमंद वैश्विक मुद्रा मानते आए हैं।



■ 1991 के आर्थिक संकट या हालिया कोविड-19 जैसी महामारी के दौरान भी घरों में सुरक्षित इस 'पीली धातु' ने देश की आयात क्षमता को अप्रत्यक्ष रूप से सहारा दिया। जब भी रुपए का अवमूल्यन होता है, सोना एक स्थिर वैश्विक संपत्ति के रूप में अपनी कीमत बनाए रखता है। इसका मतलब है कि हमारा पारंपरिक निवेश केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि सिद्ध, अंतरराष्ट्रीय वित्तीय समझ पर आधारित है। यह हमें वैश्विक आर्थिक उतार-चढ़ाव से एक हद तक बचाता है, और हमारी संप्रभुता को अप्रत्यक्ष मजबूती प्रदान करता है।

भारत की आंतरिक शक्ति का प्रमाण

हमें ये मानना चाहिए कि भारत की समृद्धि केवल खदानों, रिजर्व या औद्योगिक उत्पादन में नहीं है। भारत की असली समृद्धि घर की महिलाओं की सोच, समझ और व्यावहारिक बुद्धिमत्ता में बसी है। उनकी यह दूरदर्शिता और संयम ही भारत को पहले भी, आज भी और भविष्य में 'सोने की चिड़िया' बनाए रखेगी। ■ हर चूड़ी, हर मंगलसूत्र, हर गहना केवल आभूषण नहीं, बल्कि सुरक्षा, भविष्य की योजना और देश की अटूट आंतरिक ताकत का प्रतीक है। यही वजह है कि भारत की आर्थिक और सामाजिक स्थिरता सदियों तक बनी रही।

'भारत सोने की चिड़िया था, है और रहेगा'

यह केवल उपमा नहीं, बल्कि हमारी आंतरिक ताकत और स्थिरता का प्रमाण है। असली समृद्धि संख्या में नहीं, बल्कि सोच और समझ में है, और यह सोच हमारी महिलाओं की विरासत है।

88 से 1.21 लाख तक... 78 वर्षों में 'धन' का सच्चा साथी पीढ़ी दर पीढ़ी चमकता सोना



अजय अस्थाना
वरिष्ठ पत्रकार



भारत में सोना सिर्फ एक धातु नहीं है; यह हमारी खुशियों का प्रतीक है, सुरक्षित भविष्य का वादा है और हर संकट में हमारा सच्चा साथी भी रहा है। जब हम दीपावली पर धन और समृद्धि की कामना करते हैं, तो सोने की यह कहानी हमें बताती है कि कैसे इसने 78 वर्षों में हमारी संपत्ति को मजबूती दी है। 1947 से 2025: एक अनूठी यात्रा

भारत की आजादी (1947) के समय, जब देश एक नई राह पर चल रहा था, तब 10 ग्राम सोने का भाव महज 88.62 था। यह कीमत, जिसे आज हम एक छोटी सी मिठाई के लिए चुकाते हैं, हमारे निवेश के सफर की शुरुआत थी। शुरुआती अनिश्चितता के बाद, भाव 1950 में 99 तक पहुंचा।

20वीं सदी के अंत तक यह मूल्य क्रमिक रूप से बढ़ा, लेकिन 1980 के दशक में वैश्विक मुद्रास्फीति के कारण इसमें पहली बड़ी वृद्धि देखी गई। 1987 में यह 2,570 तक पहुंच गया और 1990 तक 3,200 हो गया। यह हमें दिखाता है कि महंगाई के हर दौर में सोना ढाल बनकर खड़ा रहा। 21वीं सदी के पहले दशक (2000-2010) में, वैश्विक बाजार के एकीकरण और मांग में तेजी आने से, कीमतें 4,400 से बढ़कर 18,500 हो गईं।

संकटों के बीच सोने का अटल भरोसा

सोने की सबसे बड़ी पहचान यह है कि जब भी दुनिया में कोई बड़ा संकट आया, इसने निवेशकों को डूबने नहीं दिया।

■ 1991 के आर्थिक तूफान में: जब देश ने आर्थिक सुधार किए, तो रुपये की कीमत गिरी। ऐसे अनिश्चित समय में, 1990 के 3,200 का भाव बढ़कर 1992 तक 4,334 हो गया। आम आदमी ने देखा कि उनका पैसा (रुपया) भले ही कमजोर हो जाए, पर सोने के रूप में उनकी क्रय शक्ति (खरीदने की ताकत) बची रही।

■ 2008 के महासंकट में: जब दुनिया भर के शेयर बाजार और संपत्ति बाजार चरमराए, तो लोगों ने अपनी पूंजी को जोखिम भरी संपत्ति से निकालकर सोने में निवेश करना शुरू कर दिया। 2007 में 10,800 पर टिका सोना, 2011 तक 26,400 तक पहुंच गया। यह साबित करता है कि वित्तीय संकटों के दौरान, सोना ही सबसे विश्वसनीय आश्रय होता है।

1947 से 2025 तक भारत में सोने के ऐतिहासिक भाव

वर्ष	भाव	वर्ष	भाव	वर्ष	भाव
1947	88.62	1974	506.00	2001	4,300.00
1948	95.87	1975	540.00	2002	4,990.00
1949	94.17	1976	432.00	2003	5,600.00
1950	99.00	1977	486.00	2004	5,850.00
1951	98.00	1978	685.00	2005	7,000.00
1952	76.00	1979	937.00	2006	8,400.00
1953	73.00	1980	1,330.00	2007	10,800.00
1954	77.00	1981	1,645.00	2008	12,500.00
1955	79.00	1982	1,800.00	2009	14,500.00
1956	90.00	1983	1,970.00	2010	18,500.00
1957	90.00	1984	2,130.00	2011	26,400.00
1958	95.00	1985	2,140.00	2012	31,050.00
1959	102.00	1986	2,570.00	2013	29,600.00
1960	111.00	1987	2,570.00	2014	28,006.50
1961	119.00	1988	3,130.00	2015	26,343.50
1962	119.00	1989	3,140.00	2016	28,623.50
1963	97.00	1990	3,200.00	2017	29,667.50
1964	63.25	1991	3,466.00	2018	31,438.00
1965	71.75	1992	4,334.00	2019	35,220.00
1966	83.75	1993	4,140.00	2020	48,651.00
1967	102.50	1994	4,598.00	2021	48,720.00
1968	162.00	1995	4,680.00	2022	52,670.00
1969	176.00	1996	5,160.00	2023	65,330.00
1970	184.00	1997	4,725.00	2024	77,913.00
1971	193.00	1998	4,045.00	2025	1,21,110.00
1972	202.00	1999	4,234.00	(अक्टूबर)	
1973	278.50	2000	4,400.00		

(*रु. प्रति 10 ग्राम)

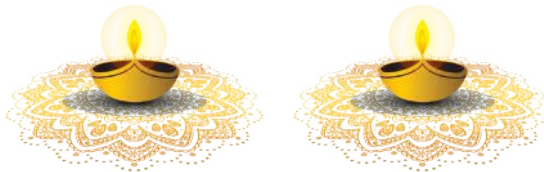
वर्ष 2020 के बाद: समृद्धि की अप्रत्याशित छलांग

■ हाल के वर्षों में सोने की कीमतों में जो उछाल आई है, वह इतिहास में अपूर्व है। 2019 में जो सोना लगभग 35,220 पर था, वह कोविड-19 महामारी के शुरुआती साल 2020 तक तेजी से बढ़कर 48,651 पर पहुंच गया। इस विशाल छलांग की मुख्य वजह केंद्रीय बैंकों द्वारा बड़ी मात्रा में पैसा छापना (मौद्रिक ढील) था। इस वजह से महंगाई की चिंता बढ़ी और निवेशकों ने कागजी मुद्राओं के मूल्यहास से बचने के लिए सोने का रुख किया।

■ इन सभी कारकों के संयुक्त प्रभाव से, 2023 में भाव 65,330 को पार कर गया और अक्टूबर 2025 तक 1,21,110 के ऐतिहासिक स्तर पर पहुंच चुका है। यह सिद्ध करता है कि दिवाली हो या कोई संकट, सोना हमेशा हमारे धन की चमक को बनाए रखता है, और यही इसकी सबसे बड़ी खासियत है।



AYUSHI
BUILDCON PVT. LTD.



AYUSHI
BUILDERS & DEVELOPERS



221-222, Shyam Nagar, Pal Link Road, Jodhpur - 342 003 (Raj.)
Tel. : 0291-2710071 Mobile : 94141 27593, 93147 11416
E-mail : mdsharma74@live.in

डिजिटल युग में खो गई दीए की लौ

रंगोली की जगह एप्स और पटाखों की जगह वर्चुअल फायर वर्क्स आ गए हैं। अब पूजा करवाने पंडित जी नहीं आते। ऑनलाइन प्लेटफार्मों की मदद से ही पूजा हो जाती है। आरती भी मोबाइल या टीवी ट्यून कर ली जाती है। भागदौड़ के इस दौर में लोग पूजा करने भी घर-परिवार में एकत्रित नहीं होते। वीडियो कॉलिंग के जरिए जुड़कर साथ-साथ पूजा करते हैं। यानी पारम्परिक त्योहारों की सांस्कृतिक जड़ें और आत्मीयता खत्म होती जा रही है।



सुरेश व्यास ✍ वरिष्ठ पत्रकार

पिछले कुछ वर्षों से महसूस हो रहा है कि दीपावली का त्योहार अब पारम्परिक नहीं होकर आधुनिकता की आंधी में ओझल होता जा रहा है। मिट्टी के दीयों की जगह इलेक्ट्रिक झालरों और रंग बिरंगे बल्बों ने ले ली है। सोशल मीडिया पर शुभकामनाओं के आदान-प्रदान ने ग्रीटिंग कार्ड तो जैसे अलोप ही कर दिए हैं। पटाखें भी 'ग्रीन' हो चले हैं। आज के दौर में डिजिटल उपकरणों और आधुनिक तकनीक का बोलबाला क्या हुआ, दीपावली जैसा पारम्परिक त्योहार का वास्तविक स्वरूप भी धुंधला नजर आता है।

दीपावली का जो उत्सव आज से डेढ़-दो दशक तक जीवंत था। लगभग पूरा परिवार काफी पहले श्रम, समर्पण और उल्लास के साथ यह त्योहार मनाने की तैयारियों में जुट जाता है, लेकिन आज अब न वह उत्साह नजर आता है और न ही उल्लास। घरों में चूने-कच्ची से सफेदी की जगह ऑयल-डिस्टेंस्पर पेंट ने ले ली है और कूची की जगह ब्रुश आ गए हैं। सफेदी का भी अपना एक वैज्ञानिक आधार होता था और खास दिन खास स्थान की सफेदी या सफाई करने की परम्परा थी। मुझे याद है बचपन में दादाजी धनतेरस के दिन घर के बाहरी इलाके की सफेदी करते थे और हम चूना भरी बाल्टी लेकर खड़े रहते थे। इस सफेदी को कंवळा कहा जाता था, लेकिन आज ये शब्द मेरे बाद की पीढ़ी को शायद पता ही नहीं है। हां, किसी को फ्रंट एलिवेशन पूछो तक यह कंवळा तुरंत समझ आ जाएगा।

पहले न सिर्फ दिवाली, बल्कि हर पर्व-त्योहार में सांस्कृतिक धरोहर, परम्परा, आत्मीयता और सामूहिक उल्लास के भाव निहित थे, लेकिन आज यह सब आधुनिकता की भेंट चढ़ वर्चुअल प्रेम व आनन्द में सिमटते नजर आते हैं। पीढ़ियों से सहेजी और निभाई जा रही परम्पराएं और त्योहार की भावना ही अब तो खत्म होती नजर आती है। यानी त्योहार भी कोरी औपचारिकताएं भर रह गए लगते हैं। हमारे बचपन के दौर में दीपावली पर क्या ही उत्साह होता था हर एक के मन में। घरों में अशोक के पत्तों से वनरमाळ और मिट्टी से बने दीयों की दीपमालाएं सजाई जाती थी। कोना-कोना जगमग हो जाता था, लेकिन आज दीयों की जगह भी इलेक्ट्रिक झालरों और टिमटिमाते बल्बों ने ले ली है। पहले एक दूसरे के यहां जाकर शुभकामनाएं देने की परम्परा थी, आज जो सोशल मीडिया और वर्चुअल ग्रीटिंग्स से काम चला रहे हैं। पहले रिश्तेदारों और ओहदेदारों को दीपावली के कार्ड भेजने की परम्परा थी। कुछ लोग पोस्टकार्ड पर लिखकर शुभकामनाएं भेजते थे, उन पर कुंकुम-केसर के छींटें डाले जाते थे। अब कार्ड तो बाजार में भी नहीं मिलते और पोस्टकार्ड तो क्या पूरा पोस्ट ऑफिस ही डिजिटल हो गया है।

ऑनलाइन पूजा पर जोर

रंगोली की जगह एप्स और पटाखों की जगह वर्चुअल फायर वर्क्स आ गए हैं। अब पूजा करवाने पंडित जी नहीं आते। ऑनलाइन प्लेटफार्मों की मदद से ही पूजा हो जाती है। आरती भी मोबाइल या टीवी ट्यून कर ली जाती है। भागदौड़ के इस दौर में लोग पूजा करने भी घर-परिवार में एकत्रित नहीं होते। वीडियो कॉलिंग के जरिए जुड़कर साथ-साथ पूजा करते हैं। यानी पारम्परिक त्योहारों की सांस्कृतिक जड़ें और आत्मीयता खत्म होती जा रही है।

कई दिन रहती थी खुशी



दीपावली के दूसरे दिन रामा-स्यामा का भी अपना अलग महत्व था। सुबह जल्दी उठकर तैयार होते। नए कपड़े-जूते पहन कर निकल जाते। पहले पूरे मोहल्ले की फेरी होती थी बच्चों की टोली बनाकर। हर घर में जाते और बड़े बुजुर्ग मीठा खिलाने के साथ गोली-बिस्किट, टॉफियां और चवन्नी-अडुनी और कोई कोई तो एक रुपए के कलदार के रूप में खर्ची देते थे। उस दौर की चवन्नी-अठन्नी इकट्ठी करके लगभग एक महीने का काम तो चल ही जाता था। फिर हमारे घर आने वाले मेहमान और रिश्तेदार रिश्तों के साथ त्योहार की मधुरता को बढ़ाते थे। ये दौर पूरे दिन चलता था, लेकिन आज ये सब जैसे लुप्त सा हो गया है।

अब कौन निकलता है रोशनी देखने

दीपावली के दिन घर ही नहीं, बाजारों को भी सजाया जाता था। देर रात-दो ढाई बजे तक रौनक रहती थी। शहर की संकड़ी गलियां और बाजार भी रंग-बिरंगे कपड़ों से सजे लोग-लुगाइयों और बच्चों की चहल पहल से गुलजार रहते थे। त्योहार का उल्लास निखर उठता था। हमारे शहर जोधपुर में रोशनी और सजावट के लिए बाजारों में प्रतिस्पर्धा रहती थी। लोग लक्ष्मी पूजन के बाद भोजन आदि करके रोशनी देखने निकलते थे। कई जगह झांकियां सजाने के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे। रंग-बिरंगी रोशनी से चकाचौंध बाजारों में पैर रखने तक की जगह नहीं मिलती थी। फिर घर आकर और अगले दिन तक यह चर्चा होती थी कि किस इलाके की रोशनी अच्छी थी। उस दौर में कई बार स्थानीय निकाय भी सजावट और रोशनी की प्रतिस्पर्धा करवाते थे और दो दिन बाद परिणाम घोषित करते तो लोग अपने अपने अंदाज में कहते-मैंने कहा था ना, ये बाजार ही फर्स्ट आएगा।

अब ये स्थितियां बदल गई हैं। शहर के बाजार की रात दस बजे तक ही मंगल हो जाते हैं। सड़कें सूनी होने लगती हैं। मुख्य सड़कों पर जरूर मामूली आवाजाही रहती है। कारण कि अब न रोशनी ऐसी होती है और न ही लोगों में वो उत्साह बचा है। अब रोशनी देखने निकलने की बजाय घर के लोग अपने-अपने कमरों में टीवी और मोबाइल में ही व्यस्त हो जाते हैं या फिर फोन पर मित्रों-परिजनों से बात करके शुभकामनाओं की हाजरी लगाते-लगाते सो जाते हैं। फिर सुबह उठकर वही फोन और वही मैसेज इस टेंशन के साथ कि कोई छूटा तो नहीं।

खो गई इलायची-सुपारी की महक



दीपावली का मौका है। वैसे तो हर त्योहार मनाने का अपना अपना तरीका हर जगह अलग होता है, लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं जो उस स्थान की खासियत बन जाती हैं। जोधपुर की बात करें तो यहां की मीठी बोली और अपणायत की छाप तो यहां त्योहारों पर भी दिख जाती है। दीपावली पर अपनों से मिलना और शुभकामनाएं देना, हमारी सुदीर्घ परम्परा का हिस्सा रहा है। पहले एक दूसरे से मिलकर त्योहार की बधाई देते थे। खुशियां बांटते थे। अब दूरियां बढ़ रही हैं तो वर्चुअली ग्रिटिंग्स का दौर आ गया है। इसे लेकर ही मुझे दीपावली का एक अनूठा किस्सा याद आ रहा है, जब नेता लोग दल बल के साथ दीपावली की रात शहर की सड़कों पर निकलते थे और आम लोगों व व्यापारियों के साथ त्योहारी खुशियां बांटते थे। अब हालांकि यह परम्परा कुछ कमजोर पड़ गई है। कुछ नेता निकलते हैं, लेकिन थोड़ी देर के लिए और कई नेताओं ने निकलना ही बंद कर दिया है। वे भी वर्चुअलिटी के जाल में उलझ चुके हैं।

तो हम बात कर रहे थे त्योहारों और खासकर दीपावली पर नेताओं के मेल मुलाकात की। जोधपुर में इसकी शुरुआत की थी तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री और पांच बार सांसद रहे अशोक गहलोत ने। गहलोत सांसद बनने से पहले भी अलग तरह की समाजसेवा के जरिए अपनी एक अलग पहचान बना चुके थे। उन्होंने 1980 में जब पहली बार लोकसभा का चुनाव जीता तो वे युवा ही थे। उन्होंने अपने क्षेत्र के लोगों से मिलने के लिए पत्र-व्यवहार को तो प्रमुख जरिया बना ही रखा था, लेकिन जब भी मौका आता तो वे आमजन से मिलने से नहीं चूकते। दीपावली का मौका आया तो गहलोत अपने कुछ सहयोगियों के साथ सोजतीगेट से पैदल ही निकल पड़े शहर की ओर। रास्ते में जो भी मिलता, मुस्करा कर वे अभिवादन करते और आगे बढ़ते जाते। दुकानदार भी मनवार करते और लोग अपने सांसद को इस तरह से मिलकर त्योहार की शुभकामनाएं देते देखकर सुखद आश्चर्य में खो जाते। इस दौरान किसी परिचित का घर आता तो वे खुद बेल बजाकर या दरवाजा खटखटा कर अंदर जाते और परिवार के सभी सदस्यों से मिलते।

यह सिलसिला कई बरसों तक चलता रहा। वे 1998 में पहली बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बने, तब भी यह सिलसिला नहीं रुका। कारों का काफिला सोजतीगेट पर छोड़कर वे ऑटो रिक्शा में सवार होकर त्रिपोलिया होते हुए कन्दोई बाजार, कटला बाजार और सिरे बाजार होते हुए जालोरीगेट पहुंचे। एक बार वे नहीं निकल सके तो आधी रात बाद सड़कें सूनी होने के बाद अपने परिचितों से मिलने उनके घर पहुंच गए। शहर के कई लोग दीपावली की रात गहलोत के आने के किस्से याद करते हैं।

गहलोत के बाद सांसद बने जसवंतसिंह विश्नोई ने भी यह परम्परा कायम रखी। अब केंद्रीय मंत्री और तीन बार से सांसद गजेंद्रसिंह शेखावत भी निकलते हैं शहर में लोगों को शुभकामनाएं देने, लेकिन गहलोत या तो दीपावली पर जोधपुर नहीं आते और आते भी हैं तो बाजार में दीपावली पर पैदल घूमने का उनका यह क्रम पिछले कुछ बरसों से जैसे थमा हुआ है। हां, सोजतीगेट पर अपने मित्र की दुकान पर कुछ देर बैठकर जरूर आने-जाने वालों से मिल लेते हैं।

नेता और जनप्रतिनिधि जब दीपावली पर लोगों से मिलने निकलते थे तो मिठाई या ड्राई फ्रूट के साथ पान-सुपारी की मनुहार जरूर होती थी। अब तो पानी सुपारी की महक भी आधुनिकता के इत्र में कहीं खो गई लगती है।

गनीमत है गांव बचे हुए हैं



कभी पंच पूर्वा दिवाली का उत्सव स्वच्छता, धन, धार्मिक आस्था और पारिवारिक एकजुटता का प्रतीक होता था। शुरुआत धनतेरस से होती थी, जब घरों की साफ सफाई करने के साथ नए बर्तन, कपड़े और आभूषण आदि खरीदने के साथ देवी लक्ष्मी का स्वागत करने के लिए घर तैयार किए जाते थे। आंगन में रंगोली और पगलिए यानी पदचिह्न बनाए जाते थे। लगता था कि किसी मेहमान के स्वागत की तैयारी है। अगले दिन नरक चतुर्दशी या रूप चौदस के दिन महिलाएं सज-धज कर तैयार होने के बाद दीपमालिकाएं जगजग्गाती थी। दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजा के दौरान तो जैसे घर ही नहीं, पूरे शहर का कोना-कोना जगमग नजर आता था। कुल मिलाकर पारम्परिक दीपावली में आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक विरासत का महत्व ज्यादा था। यह केवल भौतिक प्रसन्नता का त्योहार नहीं, बल्कि आत्मिकता और घर-परिवार में एकता की भावना को बढ़ावा देने का अवसर था। दीयों का प्रकाश अज्ञानता के अंधार को मिटाकर सत्य, ज्ञान और धर्म की राह पर चलने का संदेश देता था, लेकिन यह सब आज आधुनिकता की भेंट चढ़कर लुप्त सा होता जा रहा है। व्यावसायिक मजबूरियों के चलते अमेरिका और यूरोप में मनाई जाने वाली वर्चुअल दिवाली का स्वरूप महानगरों तक तो पहुंच ही गया है और धीरे-धीरे छोटे शहरों तक भी आने लगा है। गनीमत है, गांवों में वो उल्लास आज भी पारम्परिक नजर आता है।

अब कहां पारिवारिक ताकत... हमारे पूर्वजों की दीपावली सिर्फ एक त्योहार या उत्सव ही नहीं होती थी, मगर ये हमारी प्राचीन जीवनशैली और संस्कृति से ओतप्रोत होती थी। बड़े बुजुर्ग बच्चों को समझाते थे कि ये त्योहार कैसे और क्यों मनाए जाते हैं। इस मौके जब बाहर रहने वाले परिवार के सदस्य एक साथ मिलते थे और एक थाली में बैठकर भोजन करते थे तो परिवार की ताकत का भी अहसास होता था, लेकिन अब फोन पर ये शेयर किया जाता है कि हम पूजा करने के बाद फलों रेस्त्रां में डिनर के लिए जा रहे हैं।

नहीं बनते अब पारम्परिक व्यंजन



घरों में बेसन की चक्की, आटे के लड्डू, गुड़ से बना हलवा, सांकळिया-खाजलिया, शक्करपारे, गुजिया और मठरी जैसे पारम्परिक व्यंजन अब कहां बनते हैं। हमारे बचपन की बात करूं तो दीपावली का त्योहार हमारे लिए स्कूल की पंद्रह दिन की छुट्टियां शुरू होने के साथ ही शुरू हो जाता था। बचाई हुई पॉकेट मनी से किस्तों में पटाखे रोज लाकर चलाते थे। छोटे लाल बम और लड्डालड़ की गूंज सभी को संकेत दे देती थी कि दीपावली आ गई है। दीपावली के दिन लक्ष्मी पूजा में चना-फूलियां, बेर, शक्करकंदी, सिंघाड़े और शक्कर के बने खिलौने (मेहल माळिया), शक्कर की पेंसिल और चपड़ा चढ़ता था। ये प्रसाद सामग्री दीपावली की छुट्टियां खत्म होने के चार पांच दिन तक हमें त्योहार का अहसास करवाती थी, जब हम स्कूल यूनीफॉर्म की जेबों में भरकर ये सामग्री ले जाते थे और चलती क्लास में थोड़ा थोड़ा निकाल कर टीचर से छिपकर चबाते रहते थे।

लक्ष्मी जी की आत्मकथा

तिजोरी से डिजीटल वॉलेट तक



बलवंत राज मेहता
वरिष्ठ पत्रकार

मैं लक्ष्मी हूँ। कभी आप सभी की तिजोरियों की खनक, कभी खेतों की हरियाली, कभी गृहस्थी की सुखद छांव। मुझे चंचला कहा गया, क्योंकि मैं टिकती नहीं। चपला कहा गया, क्योंकि मैं तेजी से दौड़ती हूँ। और हां, मेरे वाहन के रूप में उल्लू को बताया गया। शायद इसलिए कि जिसके पास मैं आती हूँ, वह अकसर आंख मूंद कर अपने ही नशे में डूब जाता है।

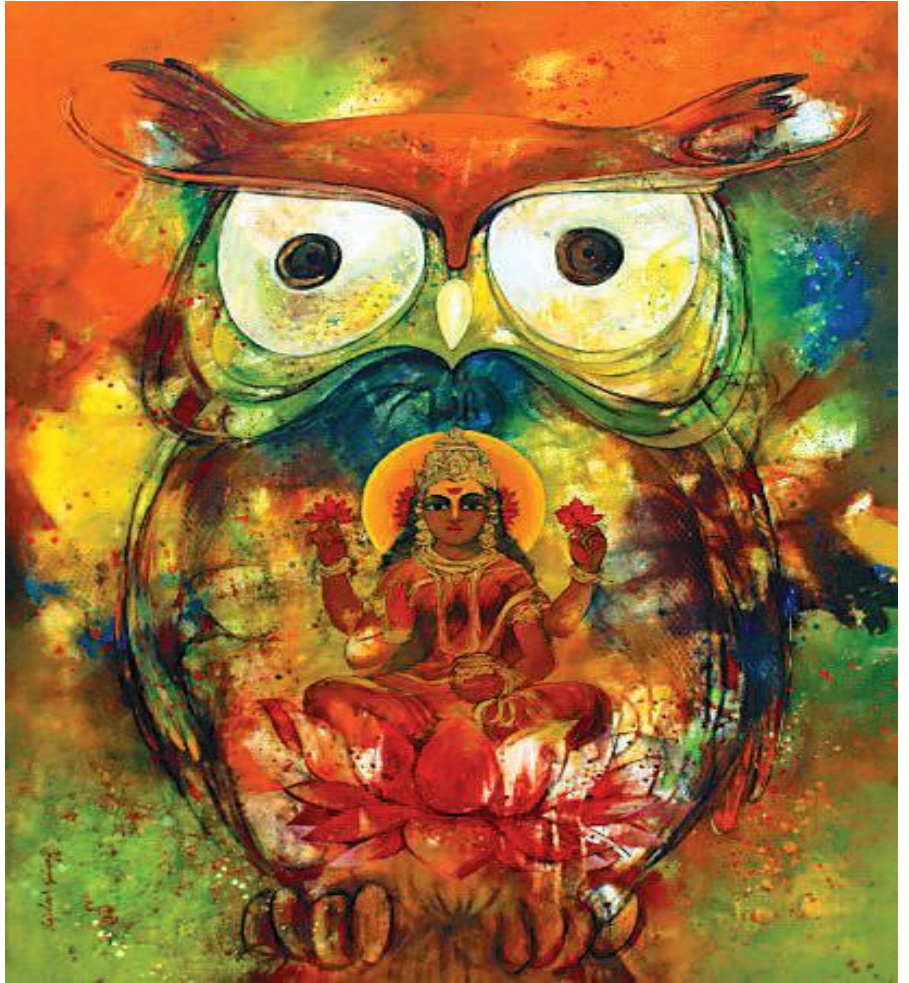
समय बदलता गया और मेरी सूरत भी। पहले मैं सोने की ठोस मुद्राओं में दमकती थी। फिर चांदी के सिक्कों में गूंजती थी। कागज के नोटों में मैंने अपने आप को समेटा। हरे, गुलाबी, नीले, बैंगनी... हर रंग में मैं थी। पर धीरे-धीरे कुछ लोगों ने मेरी सूरत काली कर दी। सत्ता और समाज में अजीब ताकत मिली उन्हें। मेरा काला रूप अंडर टेबल ही चला, पर चल तो मैं ही रही थी।

आज मैं और भी बदल चुकी हूँ। अब मैं ना सोने की चमक मात्र हूँ, ना गड़ियों की खनक। अब मैं डिजिटल वॉलेट की स्क्रीन पर चमकती हूँ। यूपीआई के क्यूआर कोड में छिपी हूँ। तुम मुझे स्कैन करते हो, और मैं बिजली की तरह खाते से खाते में दौड़ जाती हूँ। पहले बही-खातों की लाल बहियों पर पूजन होता था, अब लैपटॉप, मोबाइल और टैबलेट पर मेरा स्वागत होता है।

कहते हैं मैं चंचला हूँ, मगर असल में तुम चंचल हो। मैं तो वहीं जाती हूँ, जहां मेहनत और ईमानदारी से बुलावा आता है। किसान की पसीने की बूंद हो, मजदूर का परिश्रम, व्यापारी की सूझ-बूझ या कलाकार की साधना। मैं वहीं ठहरती हूँ।

मैं विरोधाभासों की देवी भी हूँ। पालनहार भी हूँ, भोजन, वस्त्र, शिक्षा, दवा सब देती हूँ। पर कंजूस भी हूँ। हर किसी के हिस्से में समान रूप से नहीं आती। कोई मुझे गिन नहीं पाता, और कोई मेरी तलाश में जीवन गंवा देता है।

सोने-चांदी से लेकर डिजिटल स्क्रीन तक का सफर तय करती लक्ष्मी, बदलते समय में भी वही पुराना सत्य कहती है:
“मैं वहीं ठहरती हूँ, जहां श्रम और ईमानदारी का दीप जलता है।”



कभी कंगाल की रोटी में तो कभी बड़ी हवेली में

- आप सभी ने मुझे देवी कहा, पर अपने लोभ से वस्तु बना दिया। मुझे मां माना, पर रिश्वत के लिफाफे में भी बांध दिया। मेरे ही नाम पर जुए के पत्ते फेंटे जाते हैं, और मेरे लिए भाई-भाई का खून भी बहा। पर मैं वही हूँ। कभी कंगाल की रोटी में छिपी, कभी अमीर की हवेली में ठहरी।
- आज के जमाने में मैं डिजिटल सोना भी हूँ। क्रिप्टोकॉरेंसी, ई-वॉलेट्स, ऑनलाइन शेयर... आप सभी की कल्पना ने मुझे और भी मायावी बना दिया है। पर याद रहे, चाहे मैं सोने की ठोस ईंट बनूँ या स्क्रीन की रोशनी, मैं टिकती वहीं हूँ जहां श्रम, संयम और संतोष का दीपक जलता है।
- दीपावली के पर्व पर जब आप लोग मेरे स्वागत में दीये जलाते हो, मुझे सबसे ज्यादा खुशी तब होती है, जब घर का हर सदस्य मुस्कुराता है, जब पड़ोसी के आंगन में भी रोशनी होती है, और जब भीतर से अंधकार मिटता है।

याद रखो, मैं जितनी चंचला हूँ, उतनी ही स्थिर भी। पकड़ना मुश्किल है, पर संभालना उससे भी कठिन।

परिवार की ओर लौटते कदम



रंजना विजय गांधी
लेखिका

अब भी हमारे भीतर जीवित हैं संयुक्त परिवार की यादें।
इस दीपावली, चलिए पुराने संबंधों को फिर से रोशन करें।

दीपों की कतारें जब आंगन में जलती हैं, तो लगता है जैसे घर ने अपनी सांसें फिर से पा ली हों। वो उजाला सिर्फ बिजली का नहीं होता, वह दिलों का उजाला होता है। ये उजाला होता है रिश्तों का, अपनापन का और एक साथ होने की अनुभूति का।

कभी यही दीपावली संयुक्त परिवारों की आत्मा हुआ करती थी।

आंगन में दीया सजाते हुए हंसी की आवाजों से पूरा घर गूंजता था।

कोई दीया उल्टा रख देता, कोई तेल ज्यादा डाल देता, पर उस 'गलती' में भी अपनापन होता था।

हर पीढ़ी, दादा-दादी से लेकर बच्चों तक इस त्यौहार में समान रूप से जुड़ी रहती थी।

उस समय दीपावली कर्मकांड नहीं, एक परिवार की सामूहिक धड़कन थी।

बदलते समय की चमक और सन्नाटा

समय बदला और परिवार भी।

संयुक्त परिवार अब यादों में बस गए, और जीवन "हम दो हमारे दो" में सिमट गया।

त्योहार अब कुछ घंटों का कार्यक्रम बन गए हैं। सुबह सफाई, दोपहर मिठाई, शाम पूजा और रात को सोशल मीडिया पर पोस्ट।

इस कृत्रिम जगमग में वह अनकही गर्माहट कहीं खो सी गई है।

पर क्या यह अंत है?

नहीं। यह बस एक विराम है।

हमारे भीतर अब भी उस मिलन की आकांक्षा जीवित है।

वक्त और तकनीक ने भले हमें दूर किया हो, पर मन के रिश्ते अब भी वहीं हैं। बस उन्हें फिर से छूने की देर है।



संयुक्त परिवार : सिर्फ साथ नहीं, एक अनुभव

संयुक्त परिवार केवल एक व्यवस्था नहीं था, वह जीवन जीने की कला थी। वह सिखाता था बांटना, सुनना, समझना और मिलकर रहना।

दीपावली में जब दादी पूजा की थाली सजातीं, तो सिर्फ देवी-देवताओं के लिए नहीं, हर सदस्य के सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना करतीं।

बच्चे जब मिठाई बांटते, तो उसमें रिश्तों की मिठास घुली होती थी।

यह "एक साथ रहना" केवल परंपरा नहीं था, बल्कि मनोवैज्ञानिक सुरक्षा का आधार भी था। हर पीढ़ी को अपनी जगह मिलती थी, जैसे वृद्धों को सम्मान, युवाओं को दिशा और बच्चों को संस्कार।

उजाले की वापसी संभव है

अकेलापन हमारी नियति नहीं, बस एक अस्थायी दौर है।

आज भी अगर कोई परिवार निर्णय ले कि "इस बार दीपावली सब साथ मनाएंगे", तो यकीन मानिए, घर की दीवारें भी मुस्कुरा उठेंगी।

एक कमरे का घर भी तब महल लगता है, जब वहां हंसी साझा होती है।

संयुक्त परिवार फिर से बन सकते हैं। भले एक ही छत के नीचे न सही, पर दिलों के नेटवर्क में तो जरूर।

नई पीढ़ी के लिए नई परंपराएं

आज के बच्चे और युवा पारिवारिक बंधनों से उतने दूर नहीं, जितना हम समझते हैं। उन्हें बस यह महसूस करवाने की जरूरत है कि परिवार कोई "बंधन" नहीं, बल्कि "सहारा" है। त्योहार इसका सबसे अच्छा माध्यम बन सकते हैं।

क्यों न इस बार दीपावली पर घर के युवा यह तय करें कि

- पूजा के बाद सब मिलकर एक "फैमिली डिनर" करें।
 - बच्चों को अपने बड़ों की बचपन की दीपावली की कहानियां सुनाई जाएं।
 - दीये जलाने के साथ एक धन्यवाद दीप भी रखा जाए और हर उस रिश्ते के नाम जो जीवन को उजाला देते हैं।
- ऐसे छोटे-छोटे कदम संयुक्तता की लौ फिर से जगा सकते हैं।

मोबाइल से मन तक का सफर

तकनीक को दोष देने के बजाय उसे संवेदना से जोड़ना ही समाधान है।

क्यों न मोबाइल पर "शुभ दीपावली" भेजने की जगह, उसी व्यक्ति को कॉल करके पूछा जाए, "इस बार आपने क्या नए पकवान बनाए?"

एक सच्ची बात, एक आत्मीय हंसी किसी भी कृत्रिम रोशनी से ज्यादा चमकदार होती है।

सिर्फ घर सजाने का नहीं, रिश्ते जगाने का अवसर हैं त्योहार

दीपावली का अर्थ ही है, अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ना।

और आज के समय में यह प्रकाश सबसे पहले रिश्तों में लौटना चाहिए।

क्योंकि असली उजाला वहीं है, जहां अपनापन बसता है।

चलो इस दीपावली फिर से वही दीया जलाएं, जो दीवार पर नहीं, रिश्तों के बीच जले।

फिर से वही आवाजें लौटें, वही एक साथ भोजन करने का आनंद, वही हंसी जो दिल से उठे।

क्योंकि अंततः

"घर तब नहीं जगमगाता
जब बल्ब जलते हैं,
घर तब जगमगाता है
जब लोग साथ बैठते हैं।"



किफायत दिवस



नितिन अरोड़ा



58, शॉपिंग सेंटर, रिलायंस मॉल के सामने, बासनी प्रथम फेज, जोधपुर



न्यू अरोड़ा नमकीन एवं स्वीट्स



नई शुरुआत के साथ

मेडिपल्स हॉस्पिटल के आगे, वस्त्र विनोद के सामने, मैन सालावास रोड, बासनी द्वितीय चरण, जोधपुर (राज.) 7793001302

संबंधित फर्म

श्री अरोड़ा नमकीन

दाऊजी की होटल, बासनी ओवरब्रिज के पास, ट्रांसपोर्ट नगर, बासनी, जोधपुर मो. 7793001303

हर उजाले की वजह है घर की लक्ष्मी

सिर्फ घर नहीं, भावनाओं को भी चमकाने का नाम है दीपावली।

महिलाएं इसे एक त्योहार नहीं, बल्कि घर के विकास का संकल्प बनाती हैं।



पूनम अस्थाना, लेखिका

दीपावली भारत का सबसे उजला और उल्लासपूर्ण त्योहार है। लेकिन इस रोशनी के पीछे जो सबसे बड़ी प्रेरक शक्ति होती है, वह अक्सर हमारे घर की महिलाएं होती हैं। वे न केवल इस पर्व को साज-संवार से जीवंत करती हैं, बल्कि इसके माध्यम से पूरे घर में सकारात्मकता, नई ऊर्जा और विकास की भावना भी भर देती हैं।

घर की लक्ष्मी और असली पूजन

दीपावली को 'लक्ष्मी पूजन' का पर्व कहा जाता है, लेकिन सच पूछा जाए तो हर घर में पहले से ही एक लक्ष्मी होती है, वह है घर की महिला। वही दीपावली से पंद्रह-बीस दिन पहले से अपने घर-आंगन को संवारने में जुट जाती है। पुराने कपड़े, बेकार सामान हटाती है, घर को नएपन से सजाती है। यह केवल सफाई नहीं होती, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया होती है, जैसे जीवन से नकारात्मकता को हटाकर उजाले के लिए जगह बनाई जा रही हो।

एक मिशन है दीपावली की तैयारी

अक्सर देखा जाता है कि महिलाएं दिवाली से पहले हर छोटी चीज पर ध्यान देती हैं। परदे धोने से लेकर दीवारों की धुलाई, मंदिर की सफाई से लेकर दरवाजे पर बंदनवार तक। वे चाहती हैं कि लक्ष्मीजी के स्वागत में कोई कमी न रह जाए। इस तैयारी में उनका उत्साह केवल पूजा के लिए नहीं, बल्कि अपने परिवार के 'विकास मिशन' का हिस्सा होता है।

कई बार वे घर की जरूरतें पहचानती हैं, नए बर्तन, सजावट, या छोटे मरम्मत कार्यों का सुझाव देती हैं। यह सब 'सौंदर्य' से अधिक 'समृद्धि' की भावना से जुड़ा होता है।



धनतेरस की चमक और भावनाएं

धनतेरस के दिन जब महिलाएं चांदी या स्टील के बर्तन खरीदती हैं, तो यह केवल परंपरा नहीं होती, बल्कि यह विश्वास होता है कि 'कुछ नया लाने' से घर में 'नया आरंभ' होता है। उनके लिए वह बर्तन मात्र धातु नहीं, बल्कि शुभता और सुख-समृद्धि का प्रतीक होता है। इसी विश्वास के साथ वे घर की रसोई से लेकर पूजा तक सब कुछ नए जोश के साथ करती हैं।

स्वाद और रनेह की मिठास

- दीपावली के असली आनंद में पकवानों की खुशबू घुली होती है। महिलाएं इस त्योहार में तरह-तरह के पारंपरिक व्यंजन और मिठाइयां बनाती हैं। गुश्निया, चकली, नमकीन, बेसन के लड्डू, शक्करपारे... ये केवल व्यंजन नहीं, बल्कि प्रेम की अभिव्यक्ति होते हैं।
- जब रसोई से उठती खुशबू पूरे घर में फैलती है, तो उसमें मेहनत की नहीं, ममता की मिठास होती है। महिलाएं चाहती हैं कि दीपावली पर घर में आए हर मेहमान को अपनापन महसूस हो, और परिवार के चेहरे पर सच्ची मुस्कान झलके। यही वो पल है, जब दीपों के साथ-साथ रिश्तों में भी रोशनी भर जाती है।

दीपों के संग उज्जवल विचार

- दीपावली की शाम जब घर के हर कोने में दीपक जलते हैं, तो महिलाओं की आंखों में जो चमक होती है, वह केवल रोशनी की नहीं, संतोष व सुकून की होती है। यह संतोष या सुकून होता है अपने परिवार को खुश और सुरक्षित देखने का।
- वे जानती हैं कि सफाई, सजावट या पूजा की सटीकता से भी ज्यादा जरूरी है 'भावना की शुद्धता'। और यही शुद्ध भावना पूरे घर में उजाला फैलाती है। यही असली दीपावली है।

परिवार और समाज में उनकी भूमिका



- आज के दौर में जब महिलाएं बाहर कामकाजी भी हैं, तब भी दीपावली पर वे अपनी दोहरी भूमिका निभाती हैं। ऑफिस की जिम्मेदारी के साथ घर की परंपरा भी निभाती हैं। उनका यह समर्पण बताता है कि भारतीय समाज में त्योहार केवल धार्मिक रस्म नहीं, बल्कि सामाजिक बंधन को मजबूत करने का माध्यम भी हैं।

भीतर से फैलती है रोशनी



- दीपावली की असली रोशनी तभी सार्थक है जब वह भीतर से फैले। महिलाएं इस भीतर की रोशनी की वाहक हैं। वे ही घर में प्रेम, सामंजस्य और सकारात्मक सोच का दीप जलाती हैं।
- उनके बिना दीपावली केवल दीपों की नहीं, बल्कि अधूरी रोशनी की दिवाली रह जाएगी।

जब जगमगा उठता था जयपुर



जितेन्द्र सिंह शेखावत
वरिष्ठ पत्रकार



वह भी क्या दिवाली थी। तब आज जितना शोर और मोटरों की पौ-पौ नहीं थी। तब चार दिवारी के परकोटे में बसे जयपुर में शांति और सकून का माहौल था। किले, महल हवेलियों और मंदिरों के झरोखों से जगमगाती दीपकों की रंगीन रोशनी इंद्र धनुषी रंग बरसाती थी। राजा और प्रजा का यह मिला-जुला आयोजन था। आयोजनों में प्रजा की पूरी भागीदारी थी। सार्वजनिक स्थलों की सजावट सभी में जनता शामिल थी। गोविंददेव जी का मंदिर के साथ और पूरा नगर जगमगा उठता था। जयगढ़, नाहरगढ़, गलता, सूर्य मंदिर, हवा महल, त्रिपोलिया दरवाजा, सरगासूली और रानियां के निवास जनानी ड्योढ़ी भी दीपों से दमकती थी। शोरगारों की आतिश के नायाब हुनर का जादू मानो आकाश छूने को मचल उठता था।

आज घर-घर में दिवाली पहले से ज्यादा धूम धड़के से मनाती है, लेकिन सार्वजनिक आनंद का जो भाव उस समय था। वह आज कहीं खो गया है। बाजारों में रोशनी है, लेकिन वह पुराना प्रेम का भाव अब कहीं नहीं दिखता। पहले इस त्योहार का स्वरूप आज जैसी व्यावसायिकता से ओत-प्रोत नहीं था। मिलना जुलना और प्रेम का अच्छा माहौल था। राम सवाई राम सिंह के जमाने में जयपुर की दिवाली के त्योहार पर राजा और प्रजा दोनों मिलकर ऐसे ही उल्लास भर अंदाज में मानते थे। सवाई मानसिंह के समय तक इस त्योहार का यह ऐतिहासिक नजारे का माहौल ऐसी ही रंगीनियों से भरा था।

नाहरगढ़ की पहाड़ी पर लक्ष्मी का पूजन करने के बाद रियासत के गुणवंत कलाकार बक्शी जी लक्ष्मी का चित्र पहाड़ पर उकेरते और इसकी रेखाओं में शाम को दीए जलते तो सारे शहर को पहाड़ से ही लक्ष्मी जी का स्वरूप दिखाई देता था। इतिहासकार राघवेन्द्र सिंह मनोहर के मुताबिक रियासत में श्रेष्ठ कार्य करने वाले अफसरों और कर्मचारियों को दिवाली दरबार में सम्मानित किया जाता था। दूसरे दिन महाराजा हाथी पर बैठ प्रजा के साथ दिवाली की राम राम करने निकलते थे। दिवाली पर पहला दीपक सिटी पैलेस में जलने के बाद झिलमिल दीयों से सारा शहर दमक उठता था।

जनानी ड्योढ़ी और चन्द्र महल तो नई दुल्हन की भांति सज जाते। चंद्र महल का प्रीतम निवास गीत और वाद्य संगीत के सुरों से सरोबार हो जाता। शरद पूर्णिमा नगर में दिवाली धूमधाम से मनाने की तैयारी शुरू हो जाती। सर्बता निवास की खुली छत पर सफेद बिछायत होती। दरबार सामंत दरबारी विशिष्ट नागरिक सभी काली पोशाक में होते। चांदी के वर्क में लिपटी खीर मलाई और ठंडाई से स्वागत होता। नगर में सुबह से ही दिवाली की चहल-पहल शुरू हो जाती थी। माणक चौक पर मांगलिक लोक वाद्य की स्वर लहरियां गूंजती। महाराजा काली जरी का कमरबंद अचकन जरी की लहर का साफा पहन अपने खास मेहमानों के साथ सिटी पैलेस के रंग महल की छत पर इस रोशनी के नजारे को देखते थे। चंद्र महल के अलग-अलग महल कक्षों में भिन्न-भिन्न तरह से रोशनी होती। नाहरगढ़ किले की चोटी पर सबसे पहले राज्य की ओर से पूजा होती। महारानी भी काली झिलमिल पोशाक और आभूषण पहन कर महाराजा के साथ लक्ष्मी जी का पूजन करती।

सूनी पड़ी जनानी ड्योढ़ी को कौन रोशन करे..



जयपुर रियासत की जनानी ड्योढ़ी में आज भले ही सत्राटा छाया हो, लेकिन जब यह ड्योढ़ी आबाद थी तब ड्योढ़ी में राजसी परंपरा के हिसाब से दिवाली मनाई जाती थी।

दिवाली के पहले शरद पूर्णिमा से ही कई मण मेहंदी घोल दी जाती। ड्योढ़ी की सेविकाएं महारानी साहिबा आदि महिलाओं के हाथ पांव में गीत गाते हुए मेहंदी मांडती। सेविकाएं भी सलमा सितारे लगी पोशाकें और जेवर पहन कर दीपक जलाने का काम करती। वे दीप मलिक का स्वागत करने के काम में उत्साह के साथ पलक पांवड़े बिछा देती थी। सन् 1942 में दिवाली का त्योहार 8 नवम्बर को था। सात नवम्बर को रूप चतुर्दशी यानी छोटी दिवाली के दिन खासा रसोवड़ों के मेहरों ने जयपुर के सत्ताइस कुओं का पवित्र जल लाकर पूजा के लिए रखा। सियाशरण लश्करी के मुताबिक लक्ष्मी पूजन के लिए हाथियों के ठाण की पवित्र मिट्टी मंगाकर रखी गई। वृक्षों के पत्ते आदि पूजा का सामान रावले के हाकीम को सौंपते। महालक्ष्मी माता के पूजन का पाना भी सुथार और प्रजापति कुम्हार लाता। जनानी ड्योढ़ी की सेविकाओं और कर्मचारियों को मिठाई व उपहार दिए जाते।

परम्पराओं की लौ से रोशन मेवाड़

मेवाड़ की धरती केवल इतिहास की गवाही नहीं देती, बल्कि परम्पराओं की आत्मा भी संजोए हुए है। यह वह भूमि है जहां हर त्योहार एक कहानी सुनाता है— आस्था, सादगी और लोक संस्कारों की कहानी। दीपावली जब आती है, तो यह पर्व यहां केवल घरों को नहीं, बल्कि रिश्तों, रीति-रिवाजों और पशु-पक्षियों तक को रोशन करता है। यहां के गांवों में दीपावली की अजब-गजब परम्पराएं देखने को मिलती हैं।



मधुलिका सिंह
लेखिका, पत्रकार

यहां दिवाली पर बिकते हैं होली के रंग, बिना बिजली जगमगाते हैं घर-आंगन। उदयपुर जिले के आदिवासी बहुल इलाके कोटड़ा की दीपावली बाकी दुनिया से अलग है। यहां चकाचौंध नहीं, बल्कि मिट्टी की सादगी का उजाला दिखता है। दीपावली से पूर्व कोटड़ा के सदर बाजार में रंगों की बिक्री होती है। ये जानकर आपको आश्चर्य होगा, लेकिन ये सच है। दरअसल, दीपावली के एक दिन बाद मनाए जाने वाला खेंखरा पर्व के लिए ये खरीदारी की जाती है।

सैकड़ों रंगों की स्टॉलें सजी होती हैं— लाल, पीला, हरा, नीला, सुनहरा।

पर ये रंग घर सजाने के लिए नहीं, बल्कि मवेशियों को सजाने के लिए खरीदे जाते हैं। आदिवासी परिवार अपने पशुओं को देवता मानते हैं। वे मानते हैं कि मवेशी ही उनकी आमदनी का आधार और जीवन का साथी हैं।

इसलिए दिवाली पर सबसे पहले उन्हीं का शृंगार किया जाता है— सींगों पर रंग चढ़ाए जाते हैं, शरीर पर “छापे मांडी” जाती हैं, और गले में चमकीले बड़े बांधे जाते हैं। शाम तक पूरा कोटड़ा घंटियों और खुशियों से गूँज उठता है।

वहीं दिवाली के पांचों दिन रात को जब मिट्टी के दीये जलते हैं, तो बिना बिजली वाला यह इलाका भी सबसे ज्यादा उजला दिखता है।

यहां चाइनीज लाइटें नहीं बिकतीं, क्योंकि कई गांव अब भी बिजली से वंचित हैं।

फिर भी, मिट्टी के दीयों की लौ और लोगों के चेहरे की मुस्कान इस अंधेरे को हमेशा मात दे देती है।



यहां होती है बैलों की दौड़, गोवर्धन पूजा की अनूठी परम्परा

मेवाड़ के ही वल्लभनगर क्षेत्र में दीपावली के बाद वाला दिन खेंखरा विशेष महत्व रखता है। यहां इस दिन बैलों की दौड़ आयोजित करने की परम्परा पीढ़ियों से चली आ रही है। इसे किसानों की दीपावली का दिन माना जाता है।

गांव के चौक या खेतों में सुबह से ही लोग इकट्ठा होने लगते हैं। रंग-बिरंगे कपड़ों में सजे बैल, उनके माथे पर टीका और सींगों पर चमकीले रंग— मानो सज-धज कर उत्सव का हिस्सा बनते हैं।

गांव के युवक अपने-अपने बैलों को दौड़ाने की तैयारी करते हैं। ढोल-ढमाकों और लोकगीतों के बीच जब दौड़ शुरू होती है, तो पूरा मैदान उत्साह और जोश से भर जाता है। यह परम्परा केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि कृषि संस्कृति का सम्मान है। गांव वाले मानते हैं कि इस दिन बैलों की पूजा और दौड़ उनके स्वास्थ्य, शक्ति और खेतों की समृद्धि के प्रतीक हैं।

इस आयोजन के बाद सामूहिक भोजन और लोकनृत्य होता है और खेंखरे का यह दिन पूरे इलाके में आनंद और अपनत्व का पर्व बन जाता है।

यहां थाली बजाकर लक्ष्मी के स्वागत की परम्परा

दीपावली पर उदयपुर शहर में भट्टमेवाड़ा समाज की महिलाएं भी खेंखरे की सुबह एक अनोखी रस्म निभाती हैं। वह रस्म है थाली बजाकर लक्ष्मी का स्वागत करने की। भोर होते ही महिलाएं उठकर घर की सफाई करती हैं। फिर दीपक और थाली लेकर घर के बाहर निकलती हैं, कचरा एक तय स्थान पर डालती हैं, वहां दीपक जलाती हैं और थाली बजाती हुई कहती हैं—

“लक्ष्मी आई, लक्ष्मी आई!”

इसके बाद वे घर लौटकर हर कमरे में थाली बजाती हैं— ताकि घर के हर कोने में देवी लक्ष्मी का आगमन हो। इस रस्म के बाद महिलाएं स्नान कर महालक्ष्मी मंदिर में दर्शन करने जाती हैं। यह परम्परा आज भी वैसी ही जीवित है।

उदयपुर के कई समाजों में महिलाएं इस दिन बिना झाड़ू-पोंछा लगाए घर की दहलीज और जलक्षोतों पर दीपक जलाती हैं। मान्यता है कि इस समय देवी लक्ष्मी पृथ्वी पर भ्रमण करती हैं और जहां उजाला होता है, वहां उनका आशीर्वाद उतरता है।



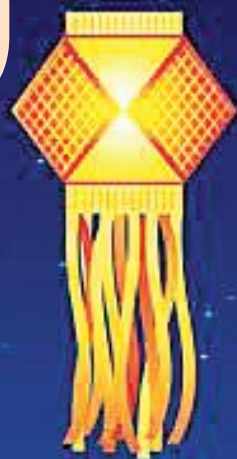
भागीरथ गोयल



प्रकाश से बढ़े विश्वास,
ऊर्जा से बने विकास
दीपावली के पावन पर्व पर
हम कामना करते हैं कि हर घर,
हर दिल और हर सपने में उजाला,
उमंग और उत्साह बना रहे।
जैसे दीपक अंधकार मिटाता है,
वैसे ही हम हर दिन आपके जीवन
में ऊर्जा और सुरक्षा का प्रकाश
भरने के लिए प्रतिबद्ध हैं।
आपका घर सजे रोशनी से,
जीवन खिले खुशियों से!



आलंद गोयल



स्काई लिफ्ट किराए के लिए उपलब्ध है



HAPPY
Diwali

UMMED ELECTRICALS

3 Baba Ramdev Mandir Road, Santosh Pura Masuriya Jodhpur, Mob: 9414130242

A CLASS GOVERNMENT CONTRACTOR IN ELECTRICALS



ओलों, अलार्म और अधिकारियों की दीपावली

जीएसटी घटाने का सरकारी ऐलान भी हुआ पर दुकानों तक पहुंचते-पहुंचते वो घटा नहीं, बढ़ा हुआ निकला। कहावत बन गई सरकार जीएसटी घटाती है, बाजार बढ़ा देता है। मिठाई वाला बोला साहब, टैक्स घटा है, पर दूध का भाव बढ़ गया। अब रसगुल्ले के डिब्बे में गुल्ले कम, रस ज्यादा हैं। दीपावली की सजावट में इस बार दीये कम, पंपफ्लेट ज्यादा हैं, सुरक्षा अपनाइए, फायरमैन बुलाइए। शहर में हर गली में गड्डे हैं, पानी है, बिजली के तार खुले हैं और सरकार कह रही है जयपुर जगमगा रहा है। जनता सोचती है हां, हर बार बिजली गिरने के बाद ही तो चमक आती है!



इस बार राजस्थान में दीपावली की शुरुआत फुलझड़ी से नहीं, फायर अलार्म से हुई है। जयपुर का आसमान आतिशबाजी नहीं, बादलों की बिजली से चमक रहा है और धरती पर सरकार “फायर सेफ्टी गाइडलाइन” की झिलमिलाती लड़ी टांग रही है।

पश्चिमी विश्वोभ ने इस बार दीपावली को ‘बरसात उत्सव’ बना दिया है। मौसम विभाग रोज़ टीवी पर भविष्यवाणी करता है आज ओले गिरेंगे और जनता सोचती है चलो मिठाई तो नहीं खरीद पाए, ओले ही मुफ्त में गिर रहे हैं!

राजस्थान में इस बार सबसे ज्यादा एक्टिव दो ही विभाग हैं। एक मौसम वाला, दूसरा माप-तौल वाला। मौसम विभाग आसमान तौल रहा है, और माप-तौल विभाग दुकानदारों के बाट। जयपुर में अनेक दुकानों पर छपा मारकर लाखों का जुर्माना ठोका गया। सरकार ने कहा उपभोक्ता हित में कार्रवाई।

जनता ने कहा अच्छा हुआ, दीपावली बोनस से पहले दुकानदारों की कमाई पर सेंध लग गई, वरना महंगाई की लक्ष्मी और चौड़ी मुस्कराती।

उधर एसएमएस अस्पताल में आग लगी और सरकार को अचानक याद आया कि अस्पताल में फायरमैन नहीं थे। अब तीन-तीन शिफ्ट में फायरमैन रहेंगे। मतलब मरीजों की जिंदगी पर भरोसा नहीं, पर फायर अलार्म पर पूरा विश्वास। जहां डॉक्टरों की कमी है, वहां अब फायरमैन इलाज करेंगे। मरीज बोले बुखार हो या ब्लास्ट, हर केस में फायरमैन तैयार है!

इधर रेल विभाग भी पटरी पर नहीं, पटरी से नीचे है। रींग्स और श्रीमाधोपुर के बीच मालगाड़ी पटरी से उतर गई। कहते हैं, बैल को बचाने के चक्कर में। अब सवाल ये है कि इस देश में रेल को बैल से बचाना जरूरी है या जनता को रेल से? रेलवे ने राहत की खबर दी किसी की जान नहीं गई। जनता बोली क्यों जाती? जनता तो पहले ही ट्रेनों से उम्मीद छोड़ चुकी है।

सोने-चांदी की कीमतें इतनी तेजी से भागी हैं कि इस बार लोग दीपावली में सोना नहीं, सोने की दुकान के बोर्ड देखकर ही संतोष कर रहे हैं। चांदी खरीदना तो अब ऐसा लगता है मानो लोन पर ग्रहण लगवाना हो। और ऊपर से मिठाई इतनी महंगी कि लोग अब ‘मीठी शुभकामनाएं’ ही भेजकर काम चला रहे हैं।

जीएसटी घटाने का सरकारी ऐलान भी हुआ पर दुकानों तक पहुंचते-पहुंचते वो घटा नहीं, बढ़ा हुआ निकला। कहावत बन गई सरकार जीएसटी घटाती है, बाजार बढ़ा देता है। मिठाई वाला बोला साहब, टैक्स घटा है, पर दूध का भाव बढ़ गया। अब रसगुल्ले के डिब्बे में गुल्ले कम, रस ज्यादा हैं। दीपावली की सजावट में इस बार दीये कम, पंपफ्लेट ज्यादा हैं, सुरक्षा अपनाइए, फायरमैन बुलाइए। शहर में हर गली में गड्डे हैं, पानी है, बिजली के तार खुले हैं और सरकार कह रही है जयपुर जगमगा रहा है। जनता सोचती है हां, हर बार बिजली गिरने के बाद ही तो चमक आती है!

राजस्थान की यह दीपावली किसी उत्सव से ज्यादा एक सरकारी फाइल जैसी है। ऊपर से रंगीन, अंदर से नम। जहां मिठाई की जगह नोटिस मिल रहे हैं, पटाखों की जगह ओले फूट रहे हैं, और दीयों की लौ में अब सरकारी बयान झिलमिला रहे हैं।

सरकार कह रही है सब नियंत्रण में है। मौसम कह रहा है अभी तो असली बरसात बाकी है। और जनता वो बस छत के नीचे दिया जलाते हुए सोच रही है इस बार दीपावली नहीं, फाइलावली है। हर घर में अलार्म, हर जेब में बिल, और हर दिशा में ओले गिर रहे हैं। मजे की बात तो ये है कि दशकों से चली आ रही त्योहार पूर्व बिजली कटौती की परम्परा रखरखाव के नाम पर बदस्तूर जारी है। फिर कैसे कह दें तुम्हें कि हम इस युग में बहुत आगे बढ़ गए हैं।

■ बलवंत राज मेहता

बाजारवाद ने औपचारिकता बना दिया है त्योहारों को “टेसूरा टेसूरा घंटार बजइयो, ...”



मणिमाला शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

भारत की लोकसंस्कृति में हर पर्व केवल उत्सव नहीं, बल्कि जीवन दर्शन है। ब्रज और बुंदेलखंड की धरती पर खेती जाने वाली टेसू-झांझी की परंपरा भी ऐसी ही एक कथा कहती है —

जहां प्रेम, वीरता और लोकगीतों का सम्मिलन हमारे सामूहिक जीवन की पहचान बन जाता है।

आज यह परंपरा लुप्तप्राय है, पर इसकी झंकार अब भी संस्कृति की गहराइयों में जीवित है।

आज के समय में जब हमारे त्योहार बाजारवाद के शोर में दबते जा रहे हैं, वहीं टेसू-झांझी जैसी लोक परंपराएं हमें याद दिलाती हैं कि पुरातन संस्कृति हमारे जीवन में केवल इतिहास नहीं, बल्कि हमारी पहचान है। भारत की मिट्टी में त्योहार केवल उत्सव नहीं, बल्कि संस्कार और सामूहिकता के जीवंत प्रतीक हैं। हर लोकपर्व अपने भीतर कोई कथा, कोई लोकस्मृति और कोई नैतिक शिक्षा समेटे होता है। गांवों की शामों में जब परंपराओं की लौ टिमटिमाती थी, तो उनमें एक विशिष्ट आभा होती थी। वह आभा जो मनुष्य को उसकी जड़ों से जोड़ती थी। अफसोस, अब यह सब धीरे-धीरे स्मृतियों में सिमटता जा रहा है।

बचपन की झंकार और लोकगीतों की मिठास

टेसू-झांझी का नाम लेते ही गांवों की गलियों में गुंजते बालस्वर, झनकती झांझियों की आवाजें और दीयों की मद्धम रोशनी आंखों के सामने आ जाती हैं। बच्चे शाम ढलते ही झांझियां लेकर घर-घर जाते थे। उनकी झांझियों के साथ ही लोकगीतों की मधुर तानें गुंज उठती थीं,

“टेसूरा टेसूरा घंटार बजइयो,
दस नगरी दस गांव बजइयो...”
टेसूरा, टेसूरा, घंटा बजइयो,
नौ नगरी, दस गांव बसइयो,
बस गए तीतर, बस गए मोर,
बूढ़ी डुकरिया लै गए चोर!
चोरन के घर खेती भई,
खाए डुकरिया मोटी भई!
मोटी है के, पीहर गई,
पीहर में मिले भाई भौजाई!
सबने मिलि कर दई बधाई!!

बच्चों की टोलियां नवरात्र की अष्टमी से लेकर दशहरे तक गलियों में घूमती थीं। घर-घर गाना गाने पर लोग उन्हें मिठाई, गुड़ या कुछ पैसे देते थे। यह केवल मनोरंजन नहीं था, बल्कि साझेपन, सामूहिकता और आनंद का उत्सव था।



क्या हैं टेसू और झांझी?

■ टेसू एक आकर्षक मिट्टी का पुतला होता है, जिसके तीन पैर होते हैं। उसका स्वरूप अत्यंत रंगीन और जीवंत होता है। मूंछों पर ताव, सिर पर पगड़ी, आंखों में काजल और हाथों में तोता या हुक्का।

■ दूसरी ओर, झांझी एक मिट्टी का रंगीन घड़ा होता है, जिसमें छेद होते हैं। उसके भीतर दीपक जलाया जाता है और बाहर से उसे लाल चुनरी, शीशे और फूलों से सजाया जाता है।

■ कई लोकविदों के अनुसार यह टेसू और झांझी जीव और चेतना के प्रतीक हैं, जहां झांझी आत्मा या प्रकाश का रूप मानी जाती है।

■ नवरात्र के दौरान लड़के टेसू की पूजा करते हैं और लड़कियां झांझी सजाती हैं। इस प्रकार यह लोकपर्व स्त्री और पुरुष दोनों की सहभागिता का उत्सव बन जाता है।

वीरता और प्रेम की लोककथा

ब्रज और बुंदेलखंड की लोककथाओं में टेसू-झांझी को महाभारत काल के वीर बर्बरीक से जोड़ा गया है। कथा है कि बर्बरीक घटोत्कच और मोरवी के पुत्र थे और उनके पास केवल तीन बाणों से पूरी सेना को परास्त करने की शक्ति थी। जब वे युद्ध में उतरने चले, तो श्रीकृष्ण ने उनसे पूछा कि वे किस पक्ष का साथ देंगे। बर्बरीक ने उत्तर दिया, “मैं उस पक्ष का साथ दूंगा जो हारता दिखेगा।”

कृष्ण समझ गए कि बर्बरीक की यह प्रतिज्ञा युद्ध का संतुलन बिगाड़ देगी। इसलिए उन्होंने उनसे शीशदान मांगा। वीर बर्बरीक ने बिना संकोच अपना शीश अर्पित कर दिया, किंतु यह इच्छा जताई कि वे युद्ध का साक्षी बनें।

लोकश्रुति में आगे यह भी कहा गया है कि बर्बरीक का मरणोपरान्त विवाह उनकी प्रेयसी झांझी से किया गया। यह प्रसंग धार्मिक ग्रंथों में नहीं, परंतु ब्रज-बुंदेलखंड के लोकगीतों और आख्यानों में आज भी गाया जाता है। इसी कथा से “टेसू-झांझी” उत्सव की लोकधारा प्रवाहित होती है।



परंपरा का उत्सव रूप

- ब्रज क्षेत्र, बुंदेलखंड और राजस्थान की कुछ सीमांत बस्तियों में आज भी टेसू और झांझी को शरद पूर्णिमा या दशहरे के दिन विवाह रूप में पूजित किया जाता है।
- लड़कियां झांझी सजाती हैं, लड़के टेसू बनाते हैं, और फिर सामूहिक रूप से दोनों का मिलन करवा कर लोकगीत गाए जाते हैं। यह परंपरा वीरता, प्रेम और त्याग की याद के साथ-साथ सामूहिक आनंद का प्रतीक भी है।

लुप्त होती परंपरा, बदलता बचपन

- आज गांवों में झांझियों की झंकार सुनाई नहीं देती। मोबाइल और टीवी ने बच्चों के खेल और गीत दोनों छीन लिए हैं। बाजारवाद के इस दौर में बच्चे “हैलोवीन” तो जानते हैं, पर “टेसू-झांझी” क्या है, यह नहीं।
- यह केवल मनोरंजन के स्वरूप का बदलाव नहीं, बल्कि संस्कारों के क्षरण की कहानी है।
- जब कोई परंपरा मरती है, तो उसके साथ एक सामाजिक चेतना भी मरती है।

संस्कृति से दूरी का असर

- जहां पहले दीप जलते थे, वहां अब एलईडी की लाइटें हैं, जहां लोकगीत गूँजते थे, वहां अब डीजे की आवाज है।
- त्योहार अब आस्था का नहीं, आयोजन का विषय बन गए हैं।
- बच्चे अब साझा आनंद के बजाय व्यक्तिगत स्क्रीन पर खुशियां खोजते हैं। यही संवेदनाओं के क्षय की प्रक्रिया है, जो समाज को भीतर से खोखला बना रही है।

संस्कृति अब केवल अतीत नहीं, पहचान भी

- झांझी जैसी परंपराएं यह सिखाती हैं कि संस्कृति केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि हमारी पहचान का जीवंत रूप है। यदि बच्चों को अपनी लोककथाओं, गीतों और रीति-रिवाजों की जानकारी नहीं होगी, तो वे अपनी जड़ों से कट जाएंगे।
- बिना जड़ों वाला वृक्ष चाहे कितना भी ऊंचा क्यों न हो, टिकता नहीं।

संरक्षण और पुनर्जीवन की राह

राजस्थान के उत्तरप्रदेश से लगते ब्रज क्षेत्र से लेकर मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड के कुछ गांवों में यह परंपरा अब भी जीवित है।

कुछ स्थानों पर झांझी खेली जाती है, टेसू तैयार किए जाते हैं और उनका विवाह शरद पूर्णिमा को संपन्न कराया जाता है। परंतु यह परंपरा केवल स्मृति में न रहे, इसके लिए ये आयोजन किए जाने चाहिए-

- स्कूलों में “झांझी गीत प्रतियोगिता”
- पंचायतों में सामूहिक आयोजन
- माता-पिता अपने बच्चों को इन लोककथाओं से जोड़ें

अगर हमने समय रहते इसे सहेजा नहीं, तो आने वाले वर्षों में हमारे गांवों की पहचान केवल यादों में रह जाएगी। और अगर हम अपनी जड़ों की ओर लौट पाए, तो शायद फिर किसी संध्या में बच्चों की तानें गूँजें,



“टेसूरा टेसूरा घंटार बजइयो, दस नगरी दस गांव बजईयो...”

क्योंकि जब तक यह गीत गाया जाता रहेगा, भारत की आत्मा और उसकी परंपराएं सांस लेती रहेंगी।



भारतीय जनता पार्टी
जोधपुर शहर जिला
की ओर से समस्त
प्रदेशवासियों को
दीपावली की
मंगल कामना।
राम-राम सा



श्री गजेंद्रसिंह शेखावत
केंद्रीय मंत्री व सांसद (जोधपुर)

श्री राजेंद्र पालीवाल
जिलाध्यक्ष, भाजपा शहर जिला



पवन आसोपा
उपाध्यक्ष, भाजपा शहर जिला



शायरों की दिवाली और दिवाली की शायरी



दिनेश सिंदल
कवि, लेखक

उर्दू के बनने संवरने में अगर हिंदुओं की साझेदारी ना होती तो यह अस्तित्व ही में ना आ सकती थी। उर्दू ने जहां इस धरती की एक-एक चीज को गले लगाया, वहीं इस देश की महानता के गीत भी गाए।

त्यो हारों का आधार धार्मिक होता है। लेकिन हमारी भारतीय संस्कृति की तासीर ही कुछ ऐसी है कि यहां सब त्योहार सबके हो जाते हैं। हम होली, दिवाली, ईद सभी एक साथ मनाते हैं।

मौलवी अब्दुल हक ने अपने अभिभाषणों में लिखा है कि उर्दू के बनने संवरने में अगर हिंदुओं की साझेदारी ना होती तो यह अस्तित्व ही में ना आ सकती थी। अतः उर्दू ने जहां इस धरती की एक-एक चीज को गले लगाया, वहीं इस देश की महानता के गीत भी गाए। दिवाली की रोशनी भी हमारे फनकारों पर एक सी बरसी। कई उर्दू के शायरों ने 'दिवाली' की रौशनी से अपनी शायरी को रोशन किया तो कई शायरों की शायरी से दिवाली रोशन हुई। 'नजीर अकबराबादी' अपनी लंबी नज़्म 'दिवाली का सामान' में दिवाली की खुशी को कुछ यूं व्यक्त करते हैं-

हर इक मकां में जला फिर दीया दिवाली का
हर इक तरफ को उजाला हुआ दिवाली का
सभी के दिल में समां भा गया दिवाली का
किसी के दिल को मज्जा खुश लगा दिवाली का
अजब बहार का है दिन बना दिवाली का

वही 'आले अहमद सुखर' अपनी नज़्म 'दिवाली' में इस दिन का सुंदर वर्णन यूं करते हैं-

गजब है लैलए- शब (रात की दुल्हन) का सिंगार आज की रात
निखर रही है उरुसे- बहार (बहार की दुल्हन) आज की रात
इन आँधियों में बशर मुस्कुरा तो सकते हैं
सियाह रात में शम्मे जला तो सकते हैं

'आले अहमद सुखर' दीप जलाने की बात करते हैं तो 'हुरमतुल इकराम' को अंधेरे के खिलाफ इस जंग में मिट्टी के दीए भी बाण की तरह चलते प्रतीत होते हैं। वे अपनी नज़्म 'लवों की रेखा' में कहते हैं कि-

रोशनी आग भी है रोशनी हनुमान भी है
रात रावण है खिंची रहने दो लम्हों की कमां
बान पर बान चलते रहे मिट्टी के दीए

झिलमिलाता रहे आईने सदाकत तलबी (सच्चाई की मांग का विधान)।

वे कहते हैं कि तुलसी का तो नाम है, दीए रामायण लिखते हैं।

नाम तुलसी का है लिखते हैं दीए रामायण
रूह बनवास के शोलो पे नुमू (विकास) पाती है।

इन्हें कैकई की जीत में भी हार लगती है और राम की हार में भी जीत -

कैकई जीत के हार है, अमावस है यही
राम की हार में भी जीत यह दिवाली है

वे कहते हैं कि 'रोशनी पुल है अंधेरा है समंदर के लिए' और

रात दिवाली की आई है उजालो इसको
नींद में कब से यह नगरी है जगा लो इसको

'शमीम करहानी' दिल का दिया जलने की बात करते हैं। वे अपनी नज़्म 'तकवीमे नूर' (प्रकाश का पंचांग) में लिखते हैं कि-

बढ़े जो जुल्मते दौरा तो मुस्कुराते रहो
हवा प्रचंड में दिल का दिया जलाते रहो
दीए जलाओ मुसलसल जलाओ आज की रात

अलग-अलग शायरों ने अलग-अलग तरीके से दीपावली को देखा है। किसी को ये मोहब्बत के फूल बरसाती हुई लगती है तो किसी को अपनी हस्ती ही दिवाली के दीयों सी लगती है। कोई उसके शहर में दशहरा आता देख अपने घर में दिवाली की तैयारी करने लग जाता है तो कोई अपने दिल का दिया जलाने की बात करता है-

कई इतिहास को एक साथ दोहराती है दिवाली
मोहब्बत पर विजय के फूल बरसती है दिवाली

- नजीर बनारसी

हस्ती का नजारा क्या कहिए, मरता है कोई जीता है कोई
जैसे की दिवाली हो कि दीया, जलता जाए बुझता जाए

- नुशूर वाहिदी

जो सुनते हैं कि तेरे शहर में दशहरा है
हम अपने घर में दिवाली सजाने लगते हैं

- जमुना प्रसाद राही

अजब बहार का है दिन बना दिवाली का
जहां में यारों अजब तरह का है ये त्यौहार

- नजीर अकबराबादी

एहसान दानिश को दिवाली का दिया हवाओं से मुठभेड़ करता हुआ दिखता है तो मोहम्मद अल्वी को खिड़कियों से झांकती हुई ये रोशनी भीतर के चिराग की याद दिलाती है। असरारुल हक असरार और मजिद अल बाकरी दिल का दिया जलाने की बात करते हैं।

जैसे दिवाली की शब हल्की हवा के सामने
गांव की नीची मुंडेरों पर चिरागों की कतार

- एहसान दानिश

खिड़कियों से झांकती है रोशनी
बत्तियां जलती है घर- घर रात में

- मोहम्मद अल्वी

घर की मुंडेरों पर बरपा है, दिवाली का सारा जश्न
कैसे हो अंदर भी चारागा मैं भी सोचूं, तू भी सोच

- असरारुल हक असरार

बीस बरस से इकतारे पर मन की जोत जलाता हूं
दीवाली की रात को तू भी कोई दिया जलाया कर

- मजिद अल बाकरी



नजीर बनारसी को रोशनी निगाहों का मुकद्दर नजर आती है तो ज़िगर मुरादाबादी इस रोशनी की बारिश में मोहब्बत की चमक देखते हैं-
निगाहों का मुकद्दर आ के चमकती है दिवाली
पहन कर दीप- माला नाज फरमाती है दिवाली
-नजीर बनारसी

जहां में नूर की बारिश हो वो दिवाली हो
हर एक दिल में मोहब्बत की चमक हो वो दिवाली हो
- ज़िगर मुरादाबादी

बशीर बद्र दिल में उजाला करने को दीपावली कहते हैं तो कैफ़ी आजमी दर्द को रोशनी में डुबोने की बात करते हैं-
दीए तो घर-घर में जलते हैं ये रिवायत है
मगर जो दिल में उजाला करें वही दिवाली है
- बशीर बद्र

दिवाली की ये रात भी कितनी हसीं लगे
हर दर्द को रोशनी में डुबो दे जैसे
- कैफ़ी आजमी

हर तरफ फैला अंधेरा है तो क्या गम करना
एक दीया तू भी जला दुनिया में उजाला कर दे
- राहत इंदौरी

अहमद फ़राज़ और वसीम बरेलवी चिराग/रोशनी को उस परम चेतना से जोड़ते हैं।
परवीन शाकिर को भी दिवाली उसी के नाम की लगती है-
तू रोशनी है तो घर-घर में उतर क्यों न जाए
तेरा नाम ले के दिवाली मनाए लोग
- अहमद फ़राज़

हर एक चिराग में अब तेरी याद जलती है
दिवाली आए तो कुछ और सजा देता हूं
- वसीम बरेलवी

रात आई तो चिरागों की तरह मुस्काए
दिवाली भी तेरे नाम की लगती है मुझको
- परवीन शाकिर

निदा फाजली दीपावली के दीप को रोशन करने के साथ- साथ रूह को रोशन करने को सच्ची दिवाली मानते हैं। वही राहत इंदौरी हर तरफ फैले अंधेरे को देख दिया जलाने की बात करते हैं।
दीप जलाओ तो ऐसे की रूह तक रोशनी हो
बस दिखावे की नहीं, दिल की दिवाली हो
- निदा फाजली

दीपावली पर सिंदल के दोहे

हर घर खुशहाली रहे, हर घर मंगल गीत।
दीवाली के साज पर, हो ऐसा संगीत॥

भीतर के अंधियार से, लड़ने को तैयार।
उजियारे का आएगा, तब सच्चा त्योहार॥

सबके लब पर आ गए, रोशनियों के गीत।
दीवाली पर हो गई, उजियारे की जीत॥

अंधियारे से क्यों कोई, 'सिंदल' हो भयभीत।
दीपक से दीपक जले, दिवाली की रीत॥

दीवाली पर दूरियां, छोड़ो रहो समीप।
कर उजियारा कह रहे, ये माटी के दीप॥

धन वैभव सुख संपदा, हर घर मंगल गीत।
तब मैं मानूँ हो गई, उजियारे की जीत॥

हर घर में उल्लास हो, खुशियों की बारात।
हर घर को रोशन करें, दिवाली की रात॥

सच में मित्रों, अंधेरे का कोई अस्तित्व नहीं है। अंधेरा विधायक नहीं है। यह मात्र रोशनी की अनुपस्थिति है। आप चाहे किसी कमरे के अंधकार को ढकेल कर बाहर कर दें तो नहीं कर सकते, बस दीप जला सकते हैं अंधकार अपने आप मिट जाएगा। इसीलिए हमारे सभी फनकारों ने रोशनी को लाने की बात कही है, दीए को जलाने की बात कही है। ताकि सच प्रकट हो जाए।

आओ! हम अपने भीतर सच का एक दीप जलाएं, ताकि हमारे भीतर फैला क्रोध, वासना, नफरत का अंधकार करुणा, ब्रह्मचर्य और प्रेम में रूपांतरित हो सके। आमीन।



दीप जलें खुशियों के, रोशन
हो गांव शहर का हर घर
प्रकाश पर्व दीपावली आप सभी के जीवन में
नई ऊर्जा, समृद्धि और सुख-शांति लेकर आए —
यही मेरी मंगलकामना है।
आइए, इस दीपावली पर हम सब संकल्प लें —
स्वच्छ गांव शहर का,
आत्मनिर्भर भारत का,
और एकजुट समाज का।
दीयों की यह लौ

हर हृदय में विश्वास, विकास और
उजाले की नई किरण जगाए।

आप सभी को
दीपोत्सव की हार्दिक
शुभकामनाएँ!



लुम्बाराम चौधरी
सांसद, सिरौही-जालोर
लोकसभा क्षेत्र
(आपका सेवक, आपका प्रतिनिधि)

मेरे दीयों से रौशान सभी, मेरे घर अंधेरा क्यों?

(एक श्रमिक की मार्मिक कथा)

मैं वह हाथ हूँ जिसने आपके घर की दीपावली सजाई। मेरे बनाए लाखों दीयों ने आपके शहर को जगमग कर दिया। पर जब त्योहार की रात आई, तो मैंने देखा, मेरे घर के दरवाजे पर सिर्फ मेरी ही थकी हुई छाया थी, और भीतर रोशनी नहीं थी।



लोग मुझे जानते नहीं, पर मैं ही हूँ, जिसने आपके घर में उजाला भरा है। मेरा नाम शायद आपको याद नहीं होगा, पर मेरी उंगलियों का स्पर्श आपके हर उत्सव में शामिल है। पिछले कई महीनों से, मैंने दिन-रात एक कर दिया। मेरे हाथों ने मिट्टी को गूँथा, उसे चाक पर चढ़ाया और एक-एक करके लाखों दीयों को आकार दिया। छोटे, बड़े, चौड़े, गहरे, रंगीन, हर तरह के दीये मेरी निगरानी में, मेरी मेहनत से बने। मेरी छोटी-सी कुटिया या नाम का कारखाना, जहाँ मैं काम करता हूँ, वह हमेशा बिजली की तेज, सफेद रोशनी में डूबी रहती थी। यह रोशनी

इसलिए जरूरी थी ताकि दीयों में कोई कमी न रह जाए, ताकि हर दीया सही ढंग से पके और मजबूत बने। मेरी हर सांस में मिट्टी की धूल भरी, मेरी आँखों ने लगातार उस तेज, कठोर प्रकाश को सहा, और मेरे हाथों ने अनवरत काम किया, ताकि आप अपनी दिवाली धूमधाम से मना सकें।

मैं जानता हूँ, मेरे बनाए ये दीये बाजारों में कितनी शान से बिकते हैं। एक-एक दीया जैसे कोई छोटा-सा तारा हो। मैं जानता हूँ कि मेरी मेहनत का यह छोटा-सा टुकड़ा आपके घरों में प्रेम, समृद्धि और भाग्य का प्रतीक बनकर जाएगा। पर इस उत्पादन की भाग-दौड़ में मैंने

अपने आपको पूरी तरह खपा दिया। मेरी उंगलियों में मिट्टी की खुश्की के अलावा कुछ नहीं बचा, मेरी पीठ अब सीधी नहीं हो पाती, और मेरी आँखों में अब हर वक़्त एक थकान का पर्दा पड़ा रहता है। मेरी मजबूरी यह है कि मालिक जो भी दाम देता है, मुझे उसी में काम करना पड़ता है, क्योंकि अगर मैं मना करूँ तो मेरे पीछे लाइन लगी है काम करने वालों की। मैं फैक्ट्री की दूधिया, तेज रोशनी में काम करता रहा, और हर दीए में रोशनी भरता रहा, पर मुझे यह एहसास ही नहीं हुआ कि यह सारी रोशनी मुझे छोड़कर, मेरे ही हाथों से, कहीं और जा रही है, मेरे घर की ओर नहीं।

कर्ज, थकान और टूटे सपने

और आज, वह रात आ गई है, दीपावली की रात। यह रात मेरे लिए काम खत्म होने की नहीं, बल्कि मेरी व्यथा के शुरू होने की रात होती है। मैं फैक्ट्री में अपनी आखिरी, लंबी पाली पूरी करके बाहर निकलता हूँ। शहर भर में पटाखों की गूंज है, हर तरफ पकवानों और मिठाइयों की सुगंध है। मेरी फैक्ट्री की बिजली अभी भी जल रही है, पर मैं जैसे ही उससे थोड़ा दूर होता हूँ, मेरी कच्ची बस्ती का रास्ता और गहरा अंधेरा होता जाता है। मेरे पैर भारी हो चुके हैं और मन बोझिल। मैं जानता हूँ कि मेरे घर में मेरी पत्नी और बच्चों को मेरी राह देखते-देखते शायद आंख लग गई होगी।

जब मैं दरवाजे पर पहुंचता हूँ, तो दिल बैठने लगता है। भीतर सिर्फ एक छोटी-सी तेल की कुप्पी जल रही है, वह भी पत्नी ने पास के मंदिर या किसी पड़ोसी से थोड़ा-सा मांगकर जलाई होगी। मेरी बेटी पास के आंगन से आती रौशनी को टकटकी लगाए देख रही है। मेरा बेटा मुझे देखते ही मेरे गले से लिपट गया, और उसका पहला सवाल था, 'बापू, हमारे लिए पटाखे क्यों नहीं लाए? और हमारे घर में बिजली की इतनी सारी रंगीन झालरें क्यों नहीं हैं, जैसा आपने बनाया था?' उसके सवाल मेरे कलेजे में तीर की तरह चुभते हैं। उस मासूम को कैसे समझाऊं कि जिस बिजली से ये झालर बनी हैं, उसके उत्पादन में मेरी पूरी जवानी खप गई, पर उस बिजली का बिल चुकाने की ताकत मेरे पास नहीं है। उस बच्चे को कैसे बताऊं कि जिन हज़ारों दीयों को मैंने अपने हाथों से आकार दिया, उनमें से एक भी दीया अपनी मजदूरी से खरीदने का पैसा मेरी जेब में नहीं बचा। मेरी सारी कमाई, जो मुझे बोनस के नाम पर मिली, वह पिछले महीने की बीमारी या छोटे-मोटे कर्ज को चुकाने में चली गई।

मेरी खुशियां छीनकर वे मना रहे हैं उत्सव

मुझे सबसे ज्यादा दर्द तब होता है, जब मैं मालिक के घर की ओर देखता हूँ। उनके महलनुमा घर की हर खिड़की रौशन होगी। मेरे हाथों से बनाए दीयों की पंक्तियां उनके आंगन में सजी होंगी। वे लक्ष्मी-गणेश की पूजा कर रहे होंगे, ताकि उनका व्यापार और लाभ कई गुना बढ़ जाए। उस लाभ का सबसे बड़ा हिस्सा, जो मेरी अनवरत और कम दाम वाली मेहनत से पैदा हुआ है। मेरी आंखों की नींद और मेरी खुशी छीनकर, वे अपनी समृद्धि का उत्सव मना रहे हैं।

मैं मालिक की समृद्धि पर खुश हूँ। पर इस रात, इस सबसे बड़े त्योहार की रात, मुझे यह सोचकर बहुत पीड़ा होती है कि मैंने पूरे देश को रौशन करने के लिए अपना जीवन खपा दिया, पर मुझे अपने बच्चों के चेहरों पर खुशी का एक छोटा-सा दीया जलाने का भी मौक़ा नहीं मिला। मेरे बच्चों की आंखों में जो खालीपन है, वह फैक्ट्री के मशीनी शोर से भी ज्यादा भयानक सन्नाटा पैदा करता है। यह मेरे घर का अंधेरा, केवल तेल या दीये की कमी का अंधेरा नहीं है, यह मेरे अस्तित्व के मूल्य का अंधेरा है। यह मेरी गरीबी नहीं, बल्कि उस सामाजिक अन्याय की काली छाया है जो फैक्ट्री की तेज रोशनी के बावजूद मेरे जीवन पर पड़ती है। मेरा श्रम इतना सस्ता क्यों है कि मैं अपने श्रम का फल भी न खरीद सकूँ?

एक पल को याद कर लेना मुझे... - आज रात मैं अपनी झोपड़ी के अंधेरे में बैठा हूँ। मैं बस इतना ही चाहता हूँ। जब आप अपने घर में मेरा बनाया दीया जलाएं, जब उस दीये की रौशनी आपके परिवार को घेरे, तो बस एक पल के लिए याद कर लेना उस श्रमिक को, जिसने इसे बनाया। मुझे आपके दान की नहीं, मेरे श्रम के सही मूल्य की जरूरत है। मैं बस इतना चाहता हूँ कि अगली दिवाली पर मेरे काम के बदले मुझे इतना मिल जाए कि मैं भी सम्मान से जी सकूँ, अपने बच्चों को ठीक से पढ़ा सकूँ, और हां, बाज़ार से थोड़े रंगीन बल्ब खरीदकर अपने घर को भी रौशन कर सकूँ।

■ मैं उम्मीद करता हूँ कि अगली दीपावली पर, जब मैं फैक्ट्री की रौशनी से बाहर निकलूँ, तो मेरे घर के दरवाजे पर मेरी अकेली थकी हुई छाया न खड़ी हो, बल्कि मेरे घर के अंदर से आती खुशी की रौशनी उसका स्वागत करे। तभी मेरा श्रम सार्थक होगा, और तभी देश का यह प्रकाश पर्व हम सबके लिए, बिना किसी छाया के, सचमुच शुभ होगा।

■ प्रस्तुति राकेश गांधी

रिद्धि सिद्धि जैन रेस्टोरेंट

की तरफ से आप सभी जोधपुरवासियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं



Happy
Diwali



रिद्धि सिद्धि
जैन रेस्टोरेंट
AIIMS हॉस्पिटल, गेट नंबर 3 के सामने
वाली गली में, बासनी, जोधपुर

9783924825, 9460775704

डिजिटल देवता: एआइ के नए अवतार

एआइ अब सिर्फ काम में नहीं, धर्म, उत्सव और ज्योतिष में भी प्रवेश कर रहा है।
रामलीला मंचन, वैदिक ज्ञान और जन्मकुण्डली विश्लेषण- सब अब डिजिटल रूप में सुलभ हैं।



प्रो. (डॉ.) सचिन बत्रा
वरिष्ठ पत्रकार



ए आइ की दुनिया में कोई डिजिटल जादुई छड़ी आपके प्राम्पट यानि आदेशात्मक व्याख्या का अनुसरण करते हुए आपको मनोवांछित परिणाम सुलभ कराती है। वहीं दूसरी ओर कुछ चैटबॉट्स आपकी चर्चा से दिशा निर्देशित होकर इच्छित समाधान या कार्य को संपूर्ण करते हैं। अब तक एआइ तकनीक ऐसे ही आपके काम में हाथ बंटा रही थी, लेकिन उसका नया अवतार तो धर्म—कर्म की रीति पद्धति में भी पारंगत हो रहा है।

इस बार भी हम दीपों के उत्सव की तैयारी करते हुए जगह-जगह रामलीला मंचन की घोषणाएं सुन रहे हैं। मजेदार बात तो यह है कि पिछले साल एक डिजिटल आर्टिस्ट माधव कोहली ने एआइ का उपयोग कर रामायण की 60 तस्वीरों को जीवंत कर दिया था। सोशल मीडिया पर उस महर्षि वाल्मीकि की संपूर्ण रामायण के आकर्षक फोटो प्रस्तुतिकरण को लोगों ने बहुत सराहा और उसे किताब का रूप देने की सलाह दी। इसमें बादलों व बिजली की गड़गड़ाहट से लेकर पार्श्व में जीव जंतुओं की आवाज लोगों को खास रास आई। इसी प्रकार दिल्ली की नवश्री धार्मिक रामलीला कमेटी ने पिछले वर्ष लाल किले पर रामलीला मंचन में एआइ इफैक्ट्स का भरपूर उपयोग किया। इसमें लाइट एंड साउंड और जंगल के दृश्यों ने दर्शकों को रोमांच से भर दिया था। इस बार भी देशभर में रामजी की लीला में रंग भरने के लिए एआइ से प्रभावी लीलाएं रची जा रही हैं।

अब धर्म में भी एआइ औजार

धर्म में लोगों की इसी रुचि को देखते हुए एमआईटी, गूगल डीपमाइंड जैसी कई कंपनियां एआइ औजार विकसित कर वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत सहित लोकप्रिय ग्रंथों को मशीन लर्निंग से पढ़ा रही हैं। इसमें अनुवाद से लेकर संस्कृत श्लोकों और वेदों की शिक्षा के लिए एआइ के डिजिटल गुरु तो घर बैठे ही प्रशिक्षण और अभ्यास के आसान विकल्प मुहैया करा रहे हैं। अब तो ऐसा लगता है कि हमारे घर आने वाले पंडित जी को भी हम जल्दी ही उनके एआइ अवतार में देख पाएंगे। क्योंकि पूरी दुनिया में धर्म-कर्म के लिए एआइ समाधान भी घर बैठे धर्म व्यापार के नए रास्ते खोल रहा है। दुनिया की बात करें तो अमेरिका में एआइ धर्मगुरुओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है। लिहाजा तकनीक विकास करने वाली कंपनियां उनके लिए एआइ टूल से लेकर चैटबॉट्स और एआइ असिस्टेंट का बाजार खोल बैठी हैं। दिलचस्प बात यह है कि ये एआइ अवतार धर्मगुरुओं को धार्मिक शोध सहित प्रवचन लिखने में सहायता करते हैं। यही नहीं, प्रवचनों के सीधे प्रसारण के समय भी एआइ टूल से विविध भाषाओं में सटीक अनुवाद की सेवाएं भी खरीदी बेची जा रही हैं। हालांकि कुछ धर्मगुरु एआइ की मदद से शोध को तर्क सम्मत मानते हैं, लेकिन एआइ से उपदेश को नैतिकता के विरुद्ध माना जा रहा है।

अजीब बात है कि विदेशों में रहने वाले अपने धर्मगुरुओं पर आश्रित नहीं रहना चाहते। ऐसे में करोड़ों लोग अपनी गोपनीय बातें चैटबॉट्स से साझा कर रहे हैं। वहां बाइबल चैट ऐप को 3 करोड़ से अधिक लोगों ने डाउनलोड किया और हैलो नामक एप ने तो नेटफ्लिक्स और टिकटॉक को पछाड़कर एप्पल स्टोर में पहले पायदान को हासिल किया है। द न्यूयार्क टाइम्स को आहियो क्रिस्टा ने बताया कि अब उसे रात को तीन बजे अपने धर्मगुरु को पेशान करने की जरूरत नहीं पड़ती, क्योंकि उसके पास एआइ गुरु है। ऐसे में अमेरिका में पिछले दशकों में करीब 4 करोड़ लोग धार्मिक स्थलों पर आना-जाना छोड़ चुके हैं। वहीं एआइ ऐप प्रे डाट कॉम को अब तक लगभग तीन करोड़ लोग डाउनलोड कर चुके हैं।

काम आसान व दाम भी वाजिब

एआइ की मदद से कठिन और भारी भरकम खर्च वाले काम आसानी और वाजिब दाम के नवीन अवसर पैदा हो रहे हैं। जिसका सफल इस्तेमाल धर्म के साथ आय के कर्म को भी संबल दे रहा है। एक रोचक जानकारी यह है कि कर्नाटक में एक पुजारी ने बिना कैमरे और स्टार के दुनिया की पहली एआइ फिल्म बना डाली। वहां सिद्देहल्ली गांव के पुजारी नरसिम्हा मूर्ति ने दस लाख खर्च कर फिल्म को खुद ही प्रोड्यूस और डायरेक्ट किया।

अब एआइ से भविष्य जानने की ललक

अब बात करते हैं ज्योतिष की, तो वैदिक पद्धति से मशीन लर्निंग का प्रशिक्षण देकर एआइ चैटबॉट्स विकसित कर लिए गए हैं। ऐसे में भविष्य जानने के लिए लोग अब मोबाइल पर चैटबॉट्स से सलाह ले रहे हैं। ज्योतिष के लिए एआइ ऐप जैसे एस्ट्रोजीपीटी, ओरैकल, कुण्डली-जीपीटी, एस्ट्रो-निदान, स्टारडस्ट, सेल्फ-गेजर, जेफरी सेलावी, एस्ट्रॉनी, टेरा मास्टर, प्लॉट-जीपीटी और टेरो-नोवा जैसे स्वचालित ऐप्स लोगों की जन्मकुण्डली का आंकलन, विश्लेषण, नई कुण्डली निर्माण और पूर्वानुमान सहित संवाद करने वाले चैटबॉट्स ग्राहकों से सवाल-जवाब या चर्चा कर पूर्वानुमान सुलभ करा रहे हैं।

हालांकि धार्मिक कार्यों की नहीं आयोजनों में भी एआइ कभी संरक्षक तो कभी प्राण रक्षक साबित हो रहा है। उदाहरण के लिए गत वर्ष आयोजित हुए महाकुंभ के दौरान प्रयागराज में हजारों सीसीटीवी कैमरों और एआइ ड्रोन की मदद से भीड़ को नियमित करने और निर्देशित करने के लिए एआइ निगरानी और चौकसी की गई। जिसकी चर्चा नीति आयोग ने राष्ट्रीय एआइ नीति निर्माण के लिए की थी। इसी प्रकार अयोध्या में दीपोत्सव में लगभग 500 ड्रोन के जरिए दर्शकों ने रामायण से संबंधित आकृतियों को आसमान में दर्शाया गया। जिन्हें एआइ आम्प्टिमाइजेशन और पाथ-प्लानिंग सॉफ्टवेयर की मदद से संचालित किया गया। दिलचस्प बात यह है कि एक तरफ ऐसे ड्रोन को भीड़ संयोजन के लिए उपयोग किया जाता है तो दूसरी ओर धर्म ग्रंथों का ज्ञान प्रसारित करने के लिए हवा में किरदार व कलाकृतियां बनाई जाती हैं। कुल मिलाकर एआइ के नए औजार संस्कृति और ज्ञान का प्रसार करने के लिए बहुउपयोगी साबित हो रहे हैं।

सोना सिक्का

ये दिवाली सोने के सिक्कों वाली

आप सभी को सोना सिक्का
परिवार की ओर से
करवा चौथ की हार्दिक
शुभकामनाएँ!!



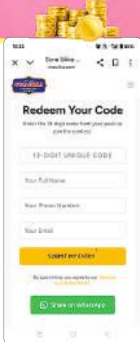
सोना सिक्का के साथ
अब सोने के सिक्कों की बरसात

270 ग्राम
सोने के सिक्के
125
भाग्यशाली ग्राहक



सोना सिक्का की तरफ से सबको मिल रहा है
मौका सोने के सिक्के जीतने का
सोना सिक्का के 125 भाग्यशाली ग्राहक हर महीने
पायेंगे कुल 270 ग्राम सोने के सिक्कों का उपहार

15 लि. (15 कि.ग्रा. टैन में) 5 ग्राम के 10 सोने के सिक्के
5 लि. (5 कि.ग्रा. टैन में) 2 ग्राम के 20 सोने के सिक्के
1 लि. (बोटल में) 1 ग्राम के 80 सोने के सिक्के



सोना सिक्का तेल के किसी भी 15 लि. टैन,
5 कि.ग्रा. जार, 1 लि. बोटल पर दिये QR कोड स्कैन कर
www.offer.sonasikka.com पर जायें.
आपके द्वारा खरीदे गए पैक में 13 अंकों का यूनिक कोड
के द्वारा प्रतियोगिता में भाग लें और पायें
सोने के सिक्के जीतने का सुनहरा मौका

विजेताओं की घोषणा
लक्की ड्रॉ
द्वारा हर महीने की
5 तारीख को



New
Product

खुशबू, स्वाद और सेहत से भरी
सोना सिक्का
सैफ्रॉन
(प्रीमियम कश्मीरी केसर)



डबल फिल्टर्ड मूंगफली तेल



रिफाईंड मूंगफली तेल



प्रीमियम कच्ची घानी सरसों तेल



SHYAM AND SHYAM OILS PVT. LTD. JODHPUR:

Plot No. B 5,6,7 (A), 1st Phase, Basni Industrial Area, Jodhpur (Raj.) © 0291-2512333, 2512338

©sonasikka.com | info@sonasikka.com | sonasikka डिस्ट्रीब्यूटर बनने एवं डीलरशिप हेतु टेल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें: 1800 313 3292

मिलते-जुलते नाम और अशुद्ध ब्रांड से सावधान. आपके स्वास्थ्य से बढ़कर कुछ नहीं

Available on amazon | Flipkart

जागे मन का आलोक



डॉ. गौरव बिरसा
मोटिवेशनल स्पीकर,
जीवन प्रबंध प्रशिक्षक

* क्या आप सदा अपने मित्र बंधुओं में बुराईयां या हर चीज का चीज का नकारात्मक पक्ष ढूँढते रहते हैं?

* क्या आप सोचते हैं कि “येन केन प्रकारेण” धन का अर्जन और वर्धन करना ही जीवन है?

* क्या आप अन्यो को परेशानी में देख कर अन्दर ही अन्दर आनंदित होते हैं?

* क्या आप सदा यह जताने में लगे रहते हैं कि “मैं हूँ और मैं बहुत कुछ हूँ?”

यदि इन प्रश्नों का उत्तर हाँ है तो निश्चित रूप से “तमस” प्रेरित मनुष्य हैं। तमस का अर्थ है अंधकार। सिर्फ धन कमाने की सोचना, दूसरों को पीड़ा देना, अहंकारी होने आदि से तात्पर्य है कि आप मानुष राक्षस ही हैं। आपमें सिर्फ तामसिक या राक्षसी प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। मन में छिपी आसुरी प्रवृत्तियों के अंधकार को अपने अंतर्मन के ज्ञान रूपी दीपक की रोशनी से समाप्त करना ही दीपावली है।

एसआरटी या त्रिगुण सिद्धांत

भगवान श्रीकृष्ण ने भगवद्गीता में त्रिगुण सिद्धांत दिया है। इसे गुण डायनामिक्स मॉडल भी कहते हैं। एस का अर्थ है सात्विक, आर अर्थात् राजसिक और टी अर्थात् तामसिक। इस सिद्धांत के अनुसार तमस से प्रेरित तामसिक मनुष्य अत्यंत अहंकारी, अज्ञानी और निम्न स्तरीय होते हैं। इसे मानसिक तमस भी कहा जा सकता है। भीतर के तमस को नष्ट करके सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश फैलाना ही शायद वास्तविक दीपावली है। राजसिक गुणों से युक्त व्यक्ति अहम् प्रधान, राजा जैसे शक्ति बढ़ाने वाले गुणों से युक्त होते हैं। त्रिगुण सिद्धांत हमें सतोगुणी अर्थात् सात्विक व्यक्ति बनने का सन्देश देता है। सात्विक व्यक्ति संग असंग के असर से मुक्त, अहंकार से रहित, धैर्य और उत्साह से युक्त, और सभी विकारों से दूर होता है। सात्विक करता बनना ही दीपावली का उद्देश्य है।

अंतस का आलोक

शास्त्रों के अनुसार ज्ञान ही प्रकाश है। हमारे भीतर अज्ञान का, अहंकार का, मोह का, तमस या अंधकार छाया हुआ है। यह अंदर का मैल या कालिमा हमें उत्तम मनुष्य या सात्विक व्यक्ति बनने से रोकती है। इसे दूर करना ही जीवन माना गया है। इस अवस्था में आवश्यकता अंतर्मन के ज्ञान को जगाकर तामसिक के स्थान पर सात्विक व्यक्ति बनने की है। जब सात्विक गुण आता है तो ज्ञान का प्रकाश फैलता है और उसी पल अज्ञान, अहं, ईर्ष्या, जलन और बुराई स्वतः नष्ट हो जाती है। ज्ञान का दीपक या अंतर्मन के ज्ञान का पुंज जलने से लोभ, मोह, आसक्ति और अनैतिक आचरण जैसे तामसिक गुण स्वतः नष्ट हो जाते हैं। दीपावली का वास्तविक मर्म बाहर करोड़ों दीपक जलाना मात्र नहीं है। दीपावली का वास्तविक मर्म है अन्दर के प्रकाश का जागरण। अंदर का प्रकाश ही तो ईश्वरीय तत्त्व है। इसका अर्थ है कि अंतर्मन के ईश्वरीय भाव को प्रकट कर उत्तम बनना ही वास्तविक दीपावली है।

मन का दीपक बाळ;
ज्योति अन्दर की जागे तो
मिटे जगत अंधियार,
मन का दीपक बाळ।



दीपावली और आभासी दुनिया... आभासी दुनिया या सच पूछो तो इस वर्चुअल वर्ल्ड ने संपर्क तो बढ़ाया है, लेकिन हृदय के मानवीय रिश्तों को कम भी किया है। दीपावली पर होने वाला मेल-जोल कम हो चुका है। जिससे कोई काम नहीं है उससे मिलना बेमानी होता प्रतीत हो रहा है। सोशल मीडिया पर संदेशों की बाढ़ है। हम दिन से लेकर रात तक सोशल मीडिया द्वारा एक दूसरे को शुभकामना देने में व्यस्त हैं। यह वास्तविक व्यस्तता नहीं है। यह छद्म व्यस्तता है। यह खुद से लड़ाई है, खुद से होने वाला द्वंद्व है। अंतर्मन बार-बार कह रहा है कि सोशल मीडिया फेसबुक पर क्या लिखते हो, जरा फेस-टू-फेस मिलो तो सही! तभी अहंकार आड़े आता है। अहंकार को कम कीजिये जनाब वरना अकेले ही रह जाएंगे।

मिर्जा गालिब कहते हैं:

मसरूफ रहने का अंदाज, तुम्हें तन्हा न कर दे गालिब,
रिश्ते फुर्सत के नहीं, तवज्जो के मोहताज होते हैं।

अब दुनिया एक स्क्रीन और अंगूठे तक सीमित है। किसी से कोई मतलब नहीं। एक अकेला बुजुर्ग है और उसे भी सन्देश मिल रहा है कि आप सभी को, आपके परिवार को शुभकामना। कोई कस्टमाइज्ड मैसेज नहीं। ऐसी भी क्या व्यस्तता? सोशल मीडिया पर फोटो डालने की प्रतियोगिता है। लक्ष्मी पूजन, गोवर्धन पूजा, यम द्वितीया के महत्त्व से ज्यादा जरूरी हो चला है स्टेस अपडेट और डिस्प्ले पिक्चर! ये मनोरोग का संकेत है।

क्या कहता है शोध?... जर्नल ऑफ ग्लोबल इन्फॉर्मेशन मैनेजमेंट और सिडनी यूनिवर्सिटी की रिसर्च के अनुसार सोशल मीडिया पर होने वाली फोटोज, डिस्प्ले पिक्चर और स्टेस की प्रतियोगिता; अवसाद, उत्पीड़न, साइबर बुलिंग, और आत्महत्या की प्रवृत्तियों तक के लिए उत्तरदायी है।

त्यौहार और मेल मिलाप... त्यौहार खुल के मनाइये। जज्बात के साथ मनाइये। प्रत्येक जानकार से फेस-टू-फेस मिलिये। उनके परिवार का हाल पूछिये। समाज के उस व्यक्ति से मिलिये जो आपकी सेवा के लिए सदा तत्पर रहते हैं। और तो और, जरा खुद से भी मुलाकात कीजिये। स्वयं को जानिये। उत्सव मनाने का कोई मौका न चूकिये। यही जीवन है।

रेल कर्मचारियों के सबसे बड़े संगठन नॉर्थ वेस्टर्न रेलवे
एम्पलाइज यूनियन की ओर से समस्त देशवासियों को
दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

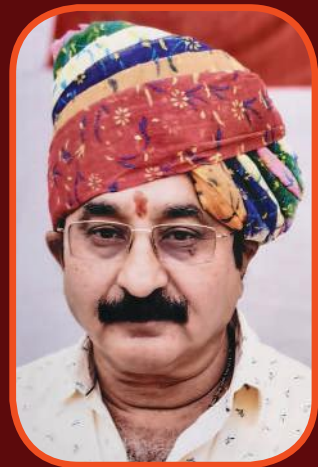
शुभ
दीपावली



मनोज कुमार परिहार
जोनल अध्यक्ष एवं मण्डल मंत्री,
एनडब्ल्यूआरईयू जोधपुर



मुकेश माथुर, महामंत्री, एनडब्ल्यूआरईयू



महेन्द्र त्यास, मण्डल अध्यक्ष,
एनडब्ल्यूआरईयू जोधपुर



राजस्थान दृष्टे

आपकी पत्रिका, आपकी बात





आमतौर पर दो दिन पड़ने वाली तिथि में त्योहार का महत्व उदया तिथि का बताया गया है, किंतु माता लक्ष्मी के पूजन पर अमावस का विशेष महत्व होने के कारण पंचांग के अनुसार, इस बार दीपावली 20 अक्टूबर को मनाई जाएगी। कार्तिक माह की अमावस्या तिथि की शुरुआत 20 अक्टूबर को 03 बजकर 44 मिनट पर होगी। वहीं, इस तिथि का समापन अगले दिन यानी 21 अक्टूबर को 05 बजकर 54 पर होगा।

दिवाली के दिन मां लक्ष्मी और भगवान गणेश की पूजा करने का शुभ मुहूर्त
शाम को 07 बजकर 08 मिनट से 08 बजकर 18 मिनट तक रहेगा।

विपुल डोभाल,
ज्योतिष, पीठाधीश्वर
श्री शनिधाम आश्रम,
विकासनगर देहरादून

ईमेल : vipravaani@gmail.com

मोबाइल : 9928424374

सरल और सहज लक्ष्मी पूजन विधि

1. प्रारंभिक तैयारी और शुद्धि

स्थान और सामग्री:

- पूजा स्थल को साफ करें।
- चौकी पर लाल या पीले रंग का कपड़ा बिछाएं।
- गणेश जी और लक्ष्मी जी की मूर्ति/चित्र स्थापित करें।
- दीपक, अगरबत्ती, फूल, अक्षत (चावल), हल्दी, कुंकुम, फल और मिठाई तैयार रखें।
- आत्म-शुद्धि:
- हाथ-पैर धोकर साफ करें।
- हाथ में जल लेकर मन में शुद्ध भाव से पूजा करने का संकल्प लें।

2. गणेश पूजन (सबसे पहले)

- किसी भी शुभ कार्य से पहले गणेश जी का पूजन अनिवार्य है।
- मूर्ति/चित्र पर दूर्वा चढ़ाएं, हल्दी और कुंकुम का तिलक करें।
- मंत्र जाप करें: ॐ गं गणपतये नमः
- गणेश जी को प्रणाम करें।

3. लक्ष्मी पूजन (मुख्य पूजा)

- दीपक और अगरबत्ती जलाएं।
- देवी लक्ष्मी की मूर्ति/चित्र पर फूल, अक्षत, हल्दी और कुंकुम अर्पित करें।
- देवी को दक्षिणा (सिक्के या नोट) श्रद्धापूर्वक अर्पित करें।
- उनसे धन, सुख और शांति की कामना करें।
- लक्ष्मी मंत्र जाप करें: ॐ महालक्ष्म्यै नमः

4. प्रसाद और आरती

- देवी लक्ष्मी को मिठाई, फल और नारियल का भोग लगाएं।
- कपूर या घी के दीपक से गणेश जी और लक्ष्मी जी की आरती करें।

5. समापन

- आरती के बाद हाथ जोड़कर मनोकामनाएं दोहराएं।
- पूजा के बाद प्रसाद को परिवार और मित्रों में बांट दें।
- घर के मुख्य द्वार और कुछ अन्य जगहों पर दीपक (दीए) जलाएं।

श्री लक्ष्मी माता की आरती

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

दुर्गा रूप निरंजनी, सुख सम्पत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम पाताल-निवासिनी, तुम ही शुभदाता।
कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनी, भवनिधि की त्राता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

जिस घर में तुम रहतीं, सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

शुभ-गुण मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशिदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता॥ ॐ जय लक्ष्मी माता॥

बॉलीवुड के स्वर्णिम युग की दिवाली जब सादगी में थी भव्यता

आज की चकाचौंध से परे, पुराने फिल्मी सितारों की दिवाली सादगी, आत्मीयता और अटूट परंपराओं का आईना थी। राज कपूर के आर.के. स्टूडियो की सीमित रौनक से लेकर दिलीप कुमार की शांत पारिवारिक पूजा तक, यह आलेख आपको उस दौर में ले जाता है जब दिवाली का मतलब महंगे फैशन नहीं, बल्कि मिट्टी के दीयों की रोशनी, घर के बने पकवान और इंडस्ट्री के भाईचारे की गर्मजोशी थी। जानिए कैसे इन दिग्गजों ने ग्लैमर से दूर रहकर, त्योहार के सच्चे सार को जीवंत रखा।

दी भारतीय सिनेमा का स्वर्णिम युग (1940 से 1970 के दशक) केवल बेहतरीन फिल्मों के लिए ही नहीं, बल्कि सितारों के आपसी मेलजोल और त्योहारों को मनाने के अनोखे अंदाज के लिए भी जाना जाता है। उस दौर के फिल्मी सितारों की दिवाली आज के ग्लैमर से कहीं अधिक आत्मीयता, परंपरा और सादगी से भरी होती थी। उस समय पार्टियां भले ही कम होती थीं, लेकिन उनका महत्व और गर्मजोशी कहीं अधिक थी।

आर.के. स्टूडियो की रौनक



भारतीय सिनेमा के 'शोमैन' राज कपूर, त्योहारों को भव्यता से मनाने की अपनी परंपरा के लिए मशहूर थे। हालांकि उनकी होली पार्टी पूरे देश में सबसे अधिक लोकप्रिय थी, लेकिन दिवाली पर भी चेंबूर स्थित उनके आर.के. स्टूडियो में एक विशेष रौनक देखने को मिलती थी। दिवाली के दिन कपूर परिवार में पारंपरिक लक्ष्मी पूजन पूरी श्रद्धा के साथ होता था। शाम को स्टूडियो में सीमित लोगों के लिए एक छोटा जलसा होता था, जहां परिवार के सदस्यों के अलावा इंडस्ट्री के करीबी दोस्त शामिल होते थे। इन समारोहों में पारंपरिक संगीत और व्यंजनों पर जोर दिया जाता था, जो आज की तरह केवल फैशन शो नहीं होते थे।

बच्चन परिवार का आगाज



अमिताभ बच्चन, जो आज बॉलीवुड में दिवाली पार्टियों की मेजबानी के लिए सबसे ज्यादा जाने जाते हैं, उन्होंने भी अपनी दिवाली परंपराओं की शुरुआत बहुत ही पारंपरिक तरीके से की। पुराने दौर में, उनके घर पर भी दिवाली का जश्न पूरी तरह से पारिवारिक और निजी हुआ करता था। उनके पिता, कवि हरिवंश राय बच्चन की कविताएं और परिवार की सादगी दिवाली के माहौल को एक साहित्यिक और भावनात्मक स्पर्श देती थी। हालांकि भव्य पार्टी देने की परंपरा उनके करियर के बाद के चरण में शुरू हुई, लेकिन शुरुआती दौर में उनके त्योहारों में परंपरा और कला का संगम होता था।

दिलीप कुमार और सादगी



'ट्रेजेडी किंग' दिलीप कुमार और सायरा बानो अपनी सादगी और शालीनता के लिए जाने जाते थे। उनकी दिवाली में दिखावे से ज्यादा पारिवारिक मूल्यों को महत्व दिया जाता था। सायरा बानो ने कई बार बताया है कि वे त्योहारों को एक आम भारतीय परिवार की तरह ही मनाना पसंद करते थे, जिसमें घर को दीयों से सजाना, लक्ष्मी पूजन करना और करीबी रिश्तेदारों व दोस्तों के साथ वस्त्र बिताना शामिल था। उनके घर की दिवाली चकाचौंध से दूर, शांत और सुकून भरी होती थी।

देव आनंद और उनका अपना अंदाज

'सदाबहार' अभिनेता देव आनंद की अपनी एक अलग ही दुनिया थी। राज कपूर की पार्टियों से दूर रहने वाले देव आनंद अक्सर त्योहारों को भी अपने ही अंदाज में मनाना पसंद करते थे। वे शूटिंग से समय निकालकर परिवार को समय देते थे या फिर प्रकृति के बीच शांति से इस पर्व का आनंद लेते थे। उनका ध्यान दिखावे पर नहीं, बल्कि त्योहार के भावनात्मक पक्ष पर केंद्रित रहता था।

पारंपरिक व्यंजन और तोहफे

पुराने दौर की दिवाली में सबसे महत्वपूर्ण था घर में बने पारंपरिक व्यंजन और मिठाइयां। सितारे खुद भी मिठाइयां बनाने में रुचि लेते थे या फिर रिश्तेदारों और पड़ोसियों से तोहफे में आई मिठाइयों का आदान-प्रदान करते थे। आज की तरह ब्रांडेड गिफ्ट हैंडर्स की जगह, हाथ से बने या सोचे-समझे छोटे-छोटे तोहफे दिए जाते थे, जिनमें स्नेह अधिक होता था।

रोशनी का असली मतलब

- उस दौर में, बिजली की रंगीन झालरों से ज्यादा महत्व मिट्टी के दीयों का होता था। हर घर दीयों की कतारों से जगमगाता था, जो 'प्रकाश के त्योहार' के वास्तविक अर्थ को दर्शाता था। सितारों के बंगले भी इसी तरह सादगी भरे दीयों की रोशनी में नहाए रहते थे, जो आज की लेजर लाइटों और हाई-टेक डेकोरेशन से बिल्कुल अलग था।
- ये हकीकत है कि त्योहारों का असली मजा भौतिक भव्यता में नहीं, बल्कि मानवीय संबंधों, परंपराओं और मन की सादगी में निहित है। उस दौर की दिवाली में जो गर्मजोशी, आत्मीयता और अनौपचारिकता थी, वह आज भी बॉलीवुड के सुनहरे पलों में एक मीठी याद की तरह दर्ज है। इन परंपराओं ने ही उन्हें 'सुपरस्टार' होने के साथ-साथ एक 'साधारण इंसान' बने रहने में मदद की।

मन की दिवाली

दिमाग में रोशनी भरने का विज्ञान



गणपत सिंह मांडोली वरिष्ठ पत्रकार

क्या आप जानते हैं, आपका ध्यान-अभ्यास (मेडिटेशन) आपके दिमाग की बनावट को हमेशा के लिए बदल सकता है? हम घर में तो दीए जलाते हैं, पर क्या कभी हमने अपने दिमाग की करोड़ों छोटी बत्तियों को जलाने की कोशिश की है? आइए, जानें आंतरिक शांति पाने का सबसे सरल वैज्ञानिक तरीका।



दीपावली का त्योहार हमें सिखाता है कि हमें अंधेरे को हटाकर रोशनी फैलानी चाहिए। हम हर साल घर के कोने-कोने में दीए जलाते हैं, ताकि किसी भी कोने में अंधेरा न रह जाए। पर क्या हमने कभी यह सोचने की कोशिश की है कि हमारे भीतर क्या चल रहा है? हमारा दिमाग, करोड़ों-अरबों छोटी-छोटी स्नायु-कोशिकाओं से बना है, जिन्हें हम बिजली के छोटे-छोटे बल्ब समझ सकते हैं। ये बल्ब आपस में तारों से जुड़े हैं और बिजली के संकेतों से बात करते हैं। जब जिंदगी में भाग-दौड़, तनाव और चिंता बहुत बढ़ जाता है, तो हमारे दिमाग में भी 'अमावस्या' छा जाती है, रोशनी कम और शोर ज्यादा। यह वह स्थिति है जब हमें हर पल घबराहट, गुस्सा और बेचैनी महसूस होती है, और हम अंदर से अशांत रहते हैं।

दिमाग के इस अंधेरे का सीधा संबंध हमारे 'डर के बटन' से है। हमारे दिमाग में एक हिस्सा होता है जो खतरे को पहचानता है, आप इसे 'डर का अलार्म' समझ लीजिए, जिसे वैज्ञानिक 'भीति-ग्रंथि' कहते हैं। जब तनाव बढ़ता है, तो यह अलार्म बिना किसी वजह के भी लगातार बजता रहता है, जैसे कोई अलार्म खराब हो गया हो। यह अलार्म हमारे शरीर में 'तनाव वाले रसायन' भर देता है, जिससे मन शांत नहीं रह पाता। यह हमारे मन का वह अंधेरा कमरा है, जहां शांति कभी नहीं टिकती और हम हर छोटी बात पर भड़कने लगते हैं। इसके साथ ही दिमाग का सबसे आगे वाला और सबसे समझदार हिस्सा होता है जो हमें सोचने, सही फैसला लेने और भावनाओं को संभालने में मदद करता है, आप इसे 'समझदारी का स्विच' समझिए। ज्यादा तनाव में यह स्विच कमजोर पड़ जाता है। इसलिए हम छोटी-छोटी बातों पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं, गुस्सा करते हैं और सही निर्णय नहीं ले पाते। यह हमारी बुद्धि का टिमटिमाता दिया है, जो बुझने वाला है। इसके अलावा, जब मन में हमेशा नकारात्मक बातें चलती हैं, तो हमारे दिमाग के अंदर के तार (स्नायु-पथ) उलझ जाते हैं, जिससे याददाश्त, ध्यान और रचनात्मकता की बिजली ठीक से नहीं पहुंचती। सीधी बात यह है कि जब तक हम इस आंतरिक अंधेरे को दूर नहीं करेंगे, बाहर की रोशनी हमें सच्ची और टिकाऊ शांति नहीं दे सकती, इसीलिए हमें एक आंतरिक दीपोत्सव शुरू करने की जरूरत है।

मदद करता है, आप इसे 'समझदारी का स्विच' समझिए। ज्यादा तनाव में यह स्विच कमजोर पड़ जाता है। इसलिए हम छोटी-छोटी बातों पर तुरंत प्रतिक्रिया देते हैं, गुस्सा करते हैं और सही निर्णय नहीं ले पाते। यह हमारी बुद्धि का टिमटिमाता दिया है, जो बुझने वाला है। इसके अलावा, जब मन में हमेशा नकारात्मक बातें चलती हैं, तो हमारे दिमाग के अंदर के तार (स्नायु-पथ) उलझ जाते हैं, जिससे याददाश्त, ध्यान और रचनात्मकता की बिजली ठीक से नहीं पहुंचती। सीधी बात यह है कि जब तक हम इस आंतरिक अंधेरे को दूर नहीं करेंगे, बाहर की रोशनी हमें सच्ची और टिकाऊ शांति नहीं दे सकती, इसीलिए हमें एक आंतरिक दीपोत्सव शुरू करने की जरूरत है।

ध्यान से दिमाग की मरम्मत



- ध्यान (मेडिटेशन) कोई मुश्किल या रहस्यमयी काम नहीं है, बल्कि यह सिर्फ अपने दिमाग को समझदारी से इस्तेमाल करने का अभ्यास है। आधुनिक विज्ञान ने साबित कर दिया है कि ध्यान आपके दिमाग की बनावट और काम करने के तरीके को बिल्कुल बदल सकता है। दिमाग की इस कमाल की बदलने की ताकत को वैज्ञानिक 'दिमाग का लचीलापन' कहते हैं। इसका मतलब है कि हमारा दिमाग किसी भी उम्र में, नए अनुभव और अभ्यास से अपनी बनावट और तारों को बदल सकता है। यह साबित करता है कि दिमाग कोई स्थिर पत्थर नहीं, बल्कि एक गूँथी हुई मिट्टी जैसा है, जिसे हम अपनी इच्छा से नया आकार दे सकते हैं। ध्यान-साधना इसी लचीलेपन का सबसे प्रभावी उपयोग है।
- हार्वर्ड के वैज्ञानिकों ने शोध में पाया कि जो लोग कुछ हफ्तों तक रोज ध्यान करते हैं, उनके दिमाग के कुछ जरूरी हिस्सों में 'भूरा पदार्थ' (ग्रे मैटर) बढ़ जाता है। यह भूरा पदार्थ मुख्य रूप से हमारे 'समझदारी के स्विच' (अग्र-प्रमस्तिष्क क्लकुट) में बढ़ता है। इससे हमारी सोचने, ध्यान लगाने और भावनाओं को काबू करने की शक्ति कई गुना बढ़ जाती है। यह ऐसा है जैसे हम अपनी समझदारी के दीप में सबसे शुद्ध तेल भर रहे हों, ताकि वह रौशनी देता रहे। वहीं दूसरी तरफ, डर के अलार्म (भीति-ग्रंथि) का आकार और काम करने का तरीका शांत हो जाता है, क्योंकि ध्यान से तनाव वाले रसायन कम बनते हैं। इससे घबराहट, गुस्सा और डर अपने आप कम होने लगते हैं। यह बिल्कुल बजते हुए अलार्म को बंद करने जैसा है।
- इसके अलावा, ध्यान हमारे दिमाग में नए और अच्छे तार जोड़ने का काम भी करता है। हमारे दिमाग में जैसे तार जुड़े होते हैं, हम वैसा ही सोचते और महसूस करते हैं। अगर हम हमेशा चिंतित रहते हैं, तो चिंता का तार बहुत मजबूत हो जाता है। ध्यान हमें नए, शांति वाले और खुशी वाले तार जोड़ने का मौका देता है। ध्यान, दिमाग की कोशिकाओं के बीच के जोड़ 'सिनेप्स' को मजबूत करता है। जब हम बार-बार शांत रहने का अभ्यास करते हैं, तो 'शांति के नए तार' मजबूत हो जाते हैं, और 'चिंता वाले पुराने तार' कमजोर होकर टूट जाते हैं। यह प्रक्रिया ठीक वैसी है, जैसे दीपावली पर हम पुराने, टूटे रास्तों को छोड़कर, ज्ञान के प्रकाश से सुसज्जित नए और सुंदर रास्तों पर दीये सजाते हैं। साथ ही, ध्यान हमारे 'समझदारी के स्विच' और 'भावनाओं के केंद्र' के बीच एक मजबूत पुल बनाता है। इससे हम अपनी भावनाओं को सिर्फ महसूस करने की जगह, उन्हें समझदारी से देखना सीख जाते हैं। यह हमारे भीतर एक शांत दर्शक का दिया जलाता है, जो मन के नाटक को बिना उलझे देखता रहता है।

हर दिन मने दिवाली

- 'मन की दिवाली' सिर्फ एक कहानी नहीं, बल्कि एक वैज्ञानिक सच्चाई है। यह संकल्प है कि हमें बाहरी रोशनी से खुश न होकर, अपने अंदरूनी दिमाग में शांति, खुशी और समझदारी का पक्का प्रकाश भरना है। हमारा सवाल था: हम घर में तो दीए जलाते हैं, पर क्या कभी हमने अपने दिमाग की करोड़ों छोटी बत्तियों को जलाने की कोशिश की है? उत्तर है: हां, हम करते हैं। जब हम शांत बैठते हैं, अपनी सांस पर ध्यान लगाते हैं, और अपने विचारों को बिना गुस्सा किए देखते हैं, तब हम अपने समझदारी के स्विच को ऑन कर रहे होते हैं, डर के अलार्म को शांत कर रहे होते हैं, और दिमाग में खुशहाली के नए तार जोड़ रहे होते हैं।
- विज्ञान ने हमें यह ज्ञान दे दिया है कि हमारा यह प्रयास व्यर्थ नहीं है; हमारा हर दिन का ध्यान-अभ्यास दिमाग को सचमुच और स्थायी रूप से बदल रहा है। यह प्रक्रिया धीरे-धीरे होती है, लेकिन इसके परिणाम पक्के होते हैं। आइए, हम सभी आज से ही जागरूकता का छोटा-सा दीया जलाना शुरू करें। यह आंतरिक दीपोत्सव हमें सिखाता है कि सबसे बड़ी दौलत हमारे मन की शांति है और सबसे बड़ा प्रकाश हमारी अपनी समझदारी। सच्ची दिवाली तभी होगी, जब हमारा पूरा दिमाग, उसकी हर छोटी बत्ती, आनंद और ज्ञान की रोशनी से जगमगाएगी, और हमारा जीवन हर पल एक उत्सव बन जाएगा।

अंदरूनी खुशी का उत्सव

- जब दिमाग की बनावट इस तरह सुधरती है, तो हम सिर्फ शांत नहीं होते; हम एक गहरे आंतरिक उत्सव का अनुभव करते हैं। सबसे पहले, फोकस का दीया प्रज्वलित होता है। ध्यान में हम अपना सारा ध्यान एक ही जगह, जैसे सांस पर टिकाते हैं। यह अभ्यास हमारे दिमाग के 'ध्यान देने वाले हिस्से' को मजबूत करता है, जिससे हमारी एकाग्रता (फोकस) और याददाश्त दोनों बेहतर होती हैं। जब हम किसी दीए की लौ को देखते हैं, तो हमारी आंखें शांत हो जाती हैं। उसी तरह, ध्यान मन को भटकने से रोककर उसकी शक्ति को बढ़ाता है। बेहतर फोकस का मतलब है जिंदगी के हर काम (पढ़ाई, नौकरी, रिश्ते) में बेहतर नतीजा। यह हमारी अंदरूनी ताकत को लेकर जैसी धार देता है, जिससे हम अपने लक्ष्य को आसानी से पा सकते हैं।
- इसके बाद, दया का दीया जलता है। कुछ तरह के ध्यान (जैसे 'सबके लिए अच्छी भावनाएं भेजने वाला ध्यान') से दिमाग के वे हिस्से सक्रिय होते हैं जो दूसरों के लिए हमदर्दी और दया महसूस करते हैं। यह अभ्यास हमें अकेलापन और स्वार्थ के अंधेरे से निकालकर जुड़ाव और प्यार की रोशनी में लाता है। जब हम दयालुता का अभ्यास करते हैं, तो दिमाग में 'खुश रहने वाले रसायन' ज्यादा बनने लगते हैं। इससे हम खुद भी खुश रहते हैं और हमारे आसपास के लोग भी। यह हमारे आसपास एक सकारात्मक माहौल बनाता है, जो केवल हमारे मन को नहीं, बल्कि हमारे सामाजिक परिवेश को भी शांत करता है।
- इस तरह ध्यान लंबी उम्र का दीया जलाता है। वैज्ञानिकों ने पाया है कि रोज ध्यान करने से दिमाग के बुढ़ापे की रफ्तार धीमी हो जाती है। एक रिसर्च के मुताबिक, ध्यान करने वाले लोगों का दिमाग उनकी असल उम्र से कई साल ज्यादा जवान रहता है। ध्यान दिमाग की कोशिकाओं को स्वस्थ रखता है, जिससे याददाश्त, सीखने की क्षमता और दिमागी तेजी बुढ़ापे तक बनी रहती है। यह हमारे आंतरिक दीये की लौ को कभी न बुझने वाला बना देता है, जो हमें स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने में मदद करता है। यह सब कुछ दिमाग के लचीलेपन के कारण ही संभव हो पाता है।

दीपोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं



**माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी एवं आर.
सीटू की ओर से आप सभी को दिवाली की
हार्दिक शुभकामनाएं...**

आईये इस मौके सब मिलकर साम्प्रदायिक सद्भाव को मजबूत करें।

**कामरेड गोपीकिशन, कामरेड बृजकिशोर,
कामरेड नदीम खान, दयालराम गुर्जर,
दिलीपसिंह, वहीदुद्दीन, हबीबुर्रहमान**

माक्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी यूनाइटेड (एम.सी.पी.आई.यू.) एवं राजस्थान ट्रेड यूनियन केंद्र (आर. सीटू) जोधपुर

खुशियों की रोशनी, हादसों से बचने के लिए सावधानियां जरूरी

दीपावली, यानी खुशियों और रोशनी का त्योहार। यह पर्व हमारे जीवन में उल्लास और सकारात्मक ऊर्जा लेकर आता है। लेकिन इस जशन के माहौल में, थोड़ी सी लापरवाही भी बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकती है। पटाखों, दीयों और बिजली की सजावट से जुड़े खतरों को ध्यान में रखते हुए, एक सुरक्षित और स्वस्थ दिवाली मनाना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए।

हादसों से बचने के लिए हमें कुछ महत्वपूर्ण सावधानियों को अपनी दिनचर्या में शामिल करना होगा, ताकि यह त्योहार सभी के लिए सुखद रहे।

पटाखों से संबंधित सुरक्षा उपाय

पटाखे दिवाली का एक अनिवार्य हिस्सा हैं, लेकिन सबसे बड़े जोखिम भी इन्हीं से होते हैं:

■ **खुले स्थान का चुनाव:** पटाखे हमेशा खुली जगह, जैसे मैदान या पार्क में ही जलाएं। इमारतों, वाहनों, सूखी घास या ज्वलनशील पदार्थों से दूर रहें।

■ **सही परिधान:** पटाखे जलाने समय ढीले, रेशमी (सिल्क) या सिंथेटिक कपड़े (नायलॉन, पॉलिएस्टर) पहनने से बचें। इसके बजाय, चुस्त-फिटिंग वाले सूती कपड़े पहनें, जो आग कम पकड़ते हैं।

■ **पानी और रेत की व्यवस्था:** जहां पटाखे जलाए जा रहे हैं, वहां हमेशा पानी से भरी एक बाल्टी और रेत/मिट्टी की एक बाल्टी तैयार

रखें। बुझे हुए पटाखों को तुरंत पानी में डालें।

■ **बच्चों की निगरानी:** बच्चों को कभी भी अकेले पटाखे चलाने की अनुमति न दें। वे हमेशा किसी वयस्क की सख्त निगरानी में ही फुलझड़ियां या अनार जैसे छोटे पटाखे जलाएं।

■ **हाथ में न जलाएं:** कोई भी पटाखा, विशेषकर अनार या रॉकेट, हाथ में पकड़कर न जलाएं। रॉकेट को हमेशा सीधे खड़े करके, खुली जगह में आसमान की ओर ही छोड़ें।

■ **फटे हुए पटाखों को न छेड़ें:** यदि कोई पटाखा जलाने के बाद न फूटे, तो उसे दोबारा जलाने की गलती न करें। उस पर पानी डालकर उसे सुरक्षित रूप से नष्ट कर दें।

दीयों व बिजली की सजावट से जुड़ी सावधानी

पटाखों के अलावा, दीये और बिजली की झालरें भी आग लगने का कारण बन सकती हैं:

■ **दीयों की सुरक्षित जगह:** तेल के दीये और मोमबत्तियां हमेशा पदों, कपड़ों, लकड़ी के फर्नीचर या अन्य ज्वलनशील वस्तुओं से सुरक्षित दूरी पर रखें। उन्हें बालकनी के किनारों पर रखने से भी बचें, क्योंकि वे हवा से गिर सकते हैं।

■ **स्थिर सतह:** दीयों को किसी समतल और स्थिर सतह पर रखें, ताकि वे गिरें नहीं।

■ **बिजली के तारों की जांच:** सजावट के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बिजली की झालरें अच्छी गुणवत्ता वाली होनी चाहिए। टूटे हुए तारों या ओवरलोडिंग से बचें, क्योंकि यह शॉर्ट सर्किट का कारण बन सकता है।



आपातकालीन स्थिति के लिए तैयारी

दुर्घटना कभी भी हो सकती है, इसलिए तैयार रहना जरूरी है:

■ **प्राथमिक उपचार किट:** अपने पास एक प्राथमिक उपचार किट अवश्य रखें, जिसमें एंटीसेप्टिक क्रीम, पट्टा, और जलन की मरहम उपलब्ध हो।

■ **जलने पर तुरंत उपाय:** यदि कोई व्यक्ति जल जाए, तो तुरंत प्रभावित क्षेत्र को कम से कम 10 मिनट तक ठंडे बहते पानी के नीचे रखें। किसी भी तरह के देसी नुस्खे (जैसे दूधपेस्ट, स्याही) लगाने से बचें और गंभीर चोट होने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें।

■ **पालतू जानवरों का ध्यान:** पटाखों की तेज आवाज से पालतू जानवर और छोटे बच्चे बहुत डर जाते हैं। उन्हें घर के अंदर रखें और जहां तक हो सके, उनके पास शोर वाले पटाखे न जलाएं।

■ **शवास संबंधी समस्याएं:** पटाखों से होने वाले धुएं और प्रदूषण से अस्थमा या शवास संबंधी समस्या वाले लोगों को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। उन्हें मास्क पहनना चाहिए और अत्यधिक प्रदूषण वाले क्षेत्रों में जाने से बचना चाहिए।

■ **इन सावधानियों का पालन करके हम न केवल अपनी और अपने परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित कर सकते हैं, बल्कि दीपावली के इस पवित्र पर्व को उसके सही अर्थों में, खुशी और प्रकाश के साथ मना सकते हैं। सुरक्षित रहें, स्वस्थ रहें**

■ **प्रस्तुति- राजस्थान टुडे टीम**



महादेव स्किन क्लिनिक

एण्ड लेजर सेंटर

SKIN • HAIR • NAIL • LASER

AVAILABLE FACILITIES

SKIN & NAIL CARE

- Treatment for all skin diseases
- Treatment for all nail diseases

HAIR CARE

- Derma Roller • PRP Therapy
- GFC Therapy • Mesotherapy

LASER TREATMENT

- Laser Facial / Peel
- Laser Hair Reduction
- Laser Toning • Tattoo Removal
- Acneskar Treatment
- Stretch Mark Treatment

COSMETOLOGY

- Chemical Peeling
- Skin Glow therapy
- Skin & Body Polishing
- Double Chin Reduction
- Skin tightening
- Vampire Facial
- Botox & Filler
- Hydra facial/Medifacial
- Skin & Body Rejuvenation
- Bride & Groom treatment
- Micro needling therapy

DREMATO SURGERY

- Electro Cautery
- Electrolysis
- Vitiligo Surgery
- Nail Surgery
- NHET
- Scar Revision



दीपों के इस पर्व पर हम कामना करते हैं कि हर घर में स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि का प्रकाश फैले।

आपके जीवन में रोग नहीं, आरोग्य का उजाला आए।
स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है — और इस धन की रक्षा में हम सदैव आपके साथ हैं।

आइए, इस दीपावली संकल्प लें कि स्वच्छता, नियमित जांच और स्वस्थ जीवनशैली से अपने परिवार को सुरक्षित रखें।

प्रकाश का यह पर्व आपके जीवन में नई ऊर्जा और मुस्कान लाए।



**Scan For
Google Location**



MAHADEV SKIN CLINIC AND LASER CENTER

Opp. Airline Hotel, Near Dr. Narendra Singh Solanki, Sirohi (raj.) 307001 | Contact: 7357476869, 9462126850 |

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष

राष्ट्रवादी विचारधारा की ऐतिहासिक यात्रा



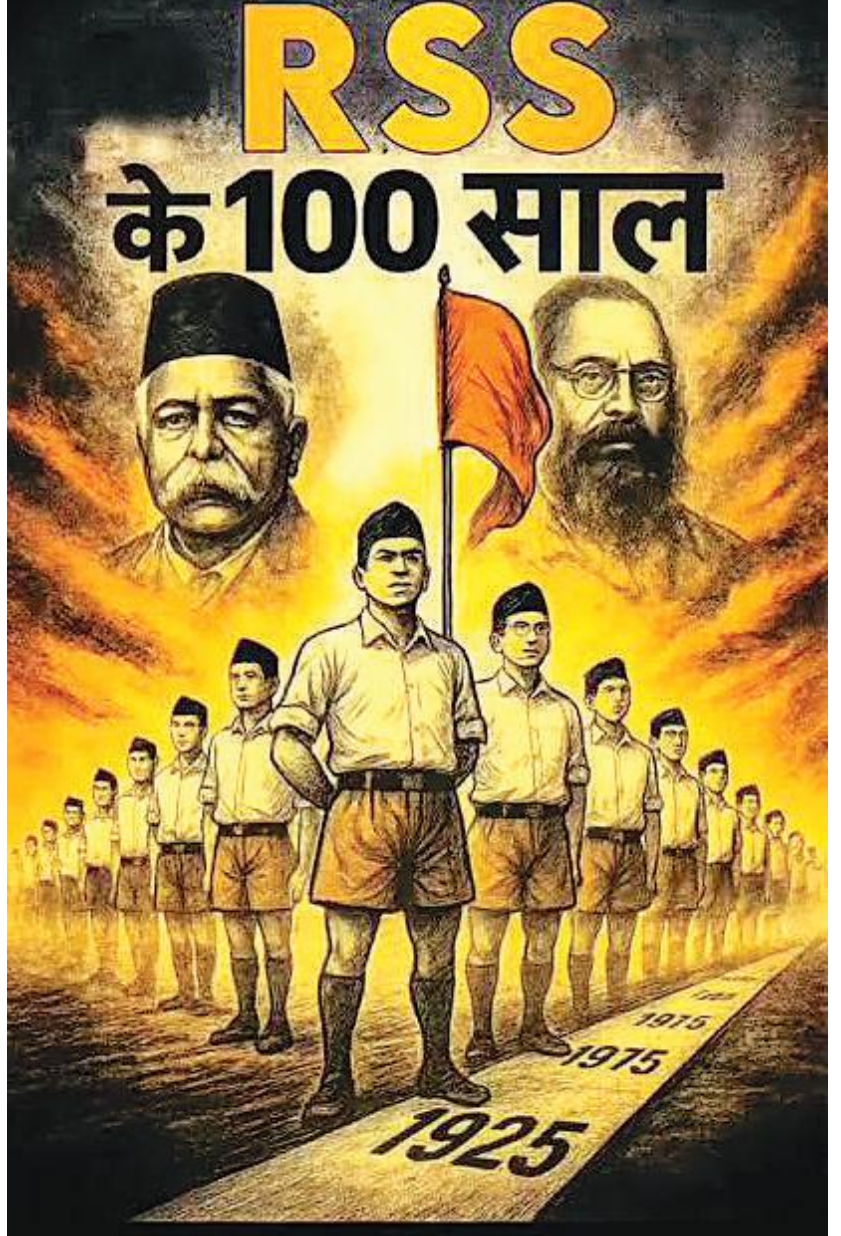
सुधांशु टाक
वरिष्ठ साहित्यकार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) का शताब्दी वर्ष 02 अक्टूबर, 2025 से शुरू हो गया, जो अगले साल यानी 2026 की विजयादशमी तक मनाया जाएगा। इस वर्ष, संघ अपने शताब्दी वर्ष के दौरान पंच परिवर्तन के तहत पांच प्रमुख मुद्दों पर जनजागरण अभियान चलाएगा। इनमें पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक समरसता, स्व-निर्भर व्यवस्था, कुटुंब प्रबोधन और नागरिक कर्तव्य शामिल हैं। इस दौरान संघ देशभर में गृह संपर्क अभियान, हिंदू सम्मेलन, प्रबुद्ध नागरिक गोष्ठी और सामाजिक सद्भाव बैठकों का आयोजन करेगा।

शताब्दी वर्ष का महत्व इसलिए भी अधिक है, क्योंकि यह संघ की यात्रा का आकलन करने का अवसर प्रदान करेगा। 1925 से 2025 तक, संघ ने असंख्य चुनौतियों का सामना किया, जैसे विभाजन की विभीषिका, आपातकाल का अंधेरा, प्राकृतिक आपदाओं का संकट। फिर भी, यह संगठन बढ़ता गया।

एक साधारण शाखा से प्रारंभ हुआ यह संगठन आज भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। इस विजयादशमी (2 अक्टूबर 2025) पर शुरू हुए संघ के 100 वर्ष के कार्यक्रम केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि एक परिपक्व संगठन की यात्रा का प्रमाण है, जहां एक व्यक्ति के सौ वर्ष बुढ़ापे का संकेत देते हैं, वहीं एक संगठन के सौ वर्ष परिपक्वता और दृढ़ता का प्रतीक होते हैं।

संघ की स्थापना के समय डॉ. हेडगेवार का उद्देश्य स्पष्ट था कि हिंदू समाज को संगठित कर राष्ट्र को मजबूत बनाना। उन्होंने कहा था- हिंदू राष्ट्र की रक्षा के लिए स्वयंसेवकों का निर्माण आवश्यक है। यह दृष्टि आज भी प्रासंगिक है। प्रत्येक विजयादशमी का सरसंघचालक का उद्बोधन यानी वार्षिक संदेश स्वयंसेवकों के लिए दिशा निर्देशिका का कार्य करता है। पूरे वर्ष यह वक्तव्य संघ के कार्यों को दिशा प्रदान करता है व सामाजिक सद्भाव, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण और राष्ट्रीय एकता जैसे मुद्दों पर प्रकाश डालता है। स्वयंसेवक इसे अत्यंत ध्यान से ग्रहण करते हैं, क्योंकि यह केवल भाषण नहीं, बल्कि संघ की वैचारिक यात्रा का सार है। इस वर्ष भी उनका संदेश शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों को दिशा देगा।



संघ की शताब्दी यात्रा भारत के उत्थान की कहानी है। डॉ. हेडगेवार की दृष्टि से प्रारंभ होकर गुरुजी की वैचारिक मजबूती, बालासाहेब की सामाजिक समरसता और वर्तमान नेतृत्व की समावेशी पहुंच तक, संघ ने राष्ट्र निर्माण में योगदान दिया। आपातकाल में जेल यात्राएं, आपदा राहत में सेवा, शिक्षा और स्वास्थ्य में योगदान, ये सब संघ की परिपक्वता दर्शाते हैं। शताब्दी वर्ष में सामाजिक सद्भाव पर फोकस होगा, जहां गुजरात, ओडिशा और पश्चिम बंगाल जैसे क्षेत्रों में स्थायी परियोजनाएं शुरू होंगी।

ऐसे स्थापना हुई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की

वर्ष 1925 की विजयादशमी। भारत की मिट्टी पर वह दिन किसी त्योहार से अधिक एक ऐतिहासिक चेतना का जागरण था। नागपुर शहर के रेशीमबाग में, जहां आमतौर पर उत्सव, मेले और पारंपरिक आयोजन होते थे, उस दिन कुछ नया हो रहा था। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार, एक दृढ़ विचार के साथ वहां उपस्थित थे। उनके साथ 17 युवक थे, पर उनके इरादे करोड़ों की चेतना जगाने वाले थे। 27 सितंबर 1925 के उस पावन दिवस पर डॉ. हेडगेवार ने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी। यह 'संघ' का जन्म था। पर यह कोई संस्था नहीं थी, यह एक विचार था, एक संगठित, आत्मसम्मान से भरा हुआ, और जागरूक हिन्दू समाज का स्वप्न।

1925 - समय की पुकार

बीसवीं सदी का भारत उस दौर से गुजर रहा था, जहां आजादी की मांग तो जोर पकड़ रही थी, लेकिन हिंदू समाज विखंडन, अस्पृश्यता, आंतरिक कलह और आत्मविस्मृति से जूझ रहा था। कांग्रेस की राजनीति, विदेशी शक्तियों का प्रभाव, और अलगाववादी विचार तेजी से जमीन बना रहे थे। कांग्रेस के भीतर रहकर स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ने वाले डॉ. हेडगेवार ने अनुभव किया कि राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक अधूरी रहेगी जब तक समाज संगठित और सांस्कृतिक रूप से सशक्त न हो। इसलिए उन्होंने तय किया, "राजनीति से ऊपर उठकर समाज निर्माण करना होगा।"

वह पहली शाखा और पहला पथ संचलन : साधारण दृश्य, असाधारण ऊर्जा



■ विजयादशमी के दिन, नागपुर में 17 युवक एक मैदान में इकट्ठे हुए। वे सब सामान्य वेशभूषा में थे, खाकी निकर, सफेद कमीज और सिर पर टोपी। कोई बैनर नहीं, कोई नारा नहीं। बस एक भगवा ध्वज, जिसे उन्होंने राष्ट्र की आत्मा का प्रतीक माना।

■ साल था 1926, शहर नागपुर में पहली शाखा मोहिते बाड़ा में स्थापित हुई। 1926 में ही संघ का पहला पथ संचलन हुआ था, जो नागपुर के हनुमान नगर के राजाबाक्षा मंदिर से होकर गुजरा। इसके बाद संघ का विजयादशमी उत्सव यशवंत स्टेडियम, कस्तूरचंद पार्क और अब रेशीमबाग में आयोजित होने लगा है।

धीरे-धीरे अन्य शहरों में पहुंची शाखाएं

■ 1940 के दशक में जब भारत अंग्रेजी हुकूमत से संघर्ष कर रहा था, संघ की शाखाएं गांव-गांव में लगने लगीं। आज गांवों, कस्बों व महानगरों में लगभग 83,000 से अधिक स्थानों पर दैनिक शाखाएं लगती हैं।

संघ कभी प्रचार नहीं करता, फिर भी यह फैलता गया। क्यों?

पूछने पर संघ के पदाधिकारी बताते हैं ऐसा इसलिए, क्योंकि संघ स्वयंसेवक बनाता है और स्वयंसेवक ही संघ को बढ़ाते हैं। शताब्दी वर्ष के संबंध में संघ के कार्यकर्ताओं के साथ ही आम जनता में भी उत्साह का माहौल है और संघ के प्रति विश्वास बढ़ता जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि संघ के कार्य ने अब पूरे देश में अपनी जड़ें जमा ली हैं। पिछले 100 वर्षों में संघ कार्य अपूर्व रूप से बढ़ा है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा 2025 में प्रस्तुत संघ कार्य की रिपोर्ट दर्शाती है कि पूरे देश में संघ का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा है।

मार्च 2024 की तुलना में मार्च 2025 में...

स्थान:	45,600	51,710	शाखाएं:	73,117	83,129
मिलन:	27,717	32,147	मंडली:	10,567	12,091

यह सिर्फ आंकड़े नहीं हैं — ये राष्ट्र निर्माण की दिशा में संघ के बढ़ते कदम हैं।

संघ का कार्य समाज के हर वर्ग तक पहुंच रहा है— सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक समरसता, स्वदेशी स्वावलंबन और राष्ट्र सेवा के संकल्प के साथ।

शताब्दी वर्ष में केंद्र सरकार की सक्रिय भागीदारी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के गौरवशाली 100 वर्षों की यात्रा के उपलक्ष्य में, भारत सरकार ने एक विशेष डाक टिकट और एक स्मारक सिक्का जारी किया है। 100 रुपये के इस सिक्के पर एक ओर राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न अंकित है और दूसरी ओर सिंह के साथ वरद मुद्रा में भारत माता की भव्य छवि अंकित है, जबकि स्वयंसेवकों को भक्ति और समर्पण भाव से उनके समक्ष नतमस्तक दिखाया गया है। स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार भारतीय मुद्रा पर भारत माता की छवि अंकित की गई है, जो एक अत्यंत गौरवशाली और ऐतिहासिक क्षण है। इस सिक्के के ऊपर संघ का बोध वाक्य भी अंकित है- 'राष्ट्राय स्वाहा, इदं राष्ट्राय इदं न मम।'

हमारा उद्देश्य भारत को विश्वगुरु बनाना...



■ राष्ट्र की परिभाषा सत्ता पर आधारित नहीं है। हम परतंत्र थे, तब भी राष्ट्र था। अंग्रेजी का नेशन शब्द स्टेट से जुड़ा है, जबकि भारतीय राष्ट्र की अवधारणा सत्ता से जुड़ी नहीं है।

भारत आजादी के 75 वर्षों में वह वांछित दर्जा हासिल नहीं कर सका, जो उसे मिलना चाहिए था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का उद्देश्य देश को 'विश्वगुरु' बनाना है और दुनिया में भारत के योगदान का समय आ गया है। अगर हमें देश का उत्थान करना है, तो यह किसी एक पर काम छोड़ देने से नहीं होगा। हर किसी को अपनी भूमिका निभानी होगी।

(राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत का वक्तव्य)



प्रधानमंत्री मोदी संघ के 100 वर्षों पर

■ संघ के स्वयंसेवक, जो अनवरत रूप से देश की सेवा में जुटे हैं, समाज को सशक्त कर रहे हैं। इसकी भी झलक इस डाक टिकट में है। मैं इन स्मृति सिक्कों और डाक टिकट के लिए देशवासियों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

(पीएम मोदी वक्तव्य, संघ के शताब्दी वर्ष समारोह के दौरान)



जन समर्थन के साथ संघ

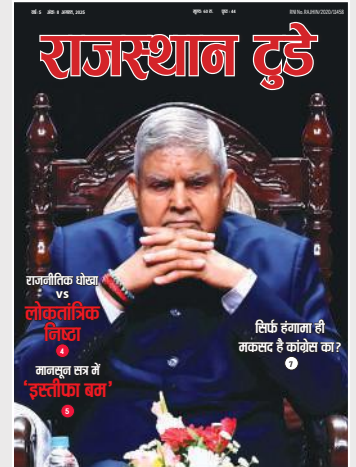
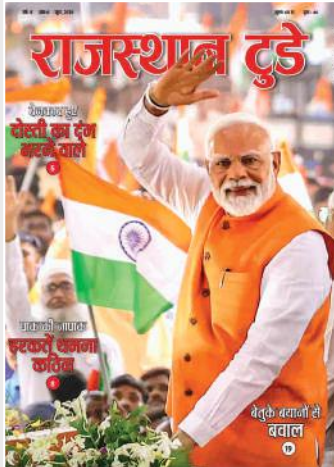
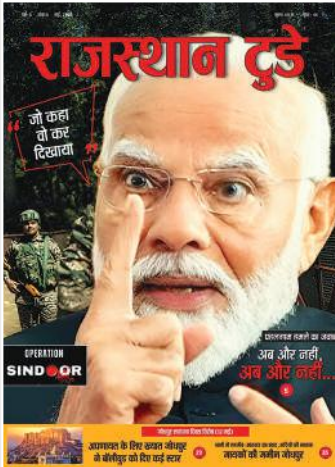
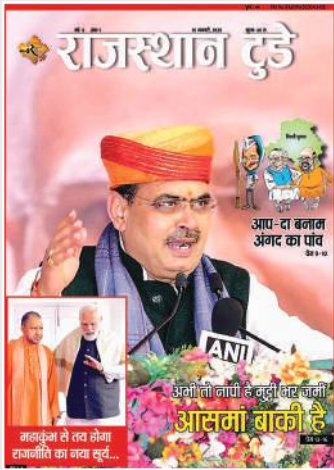
■ संघ के स्वयंसेवक, देश सेवा से जुड़े अभियान में सहयोग और भागीदारी के लिए समाज के सभी वर्गों तक पहुंचने का विशेष प्रयास करेंगे। सभी के समन्वित प्रयासों के माध्यम से राष्ट्र यात्रा का अगला चरण समग्र विकास की ओर अग्रसर होगा।

(संघ के सरकार्यवाह, दत्तात्रेय होसबोले का वक्तव्य)



राजस्थान टुडे

आपकी पत्रिका, आपकी बात



मासिक समाचार पत्रिका के लिए सदस्यता प्रपत्र

नमस्कार,

हम आपको हमारी मासिक समाचार पत्रिका के साथ जोड़ने के लिए आमंत्रित करते हैं। हमारी पत्रिका में आपको देश और दुनिया की नवीनतम खबरें, विशेषज्ञों के लेख और विश्लेषण, और विशेष सामग्री मिलेगी।

सदस्यता विवरण

- सदस्यता शुल्क: 1000 पोस्टल चार्ज सहित प्रति वर्ष (12 अंक)
- सदस्यता अवधि: 1 वर्ष (12 अंक)
- भुगतान विकल्प: ऑनलाइन UPI भुगतान

सदस्यता प्रपत्र

नाम : _____

पता : _____

शहर : _____

राज्य : _____

पिन कोड : _____

मोबाइल नंबर : _____

ईमेल आईडी : _____

भुगतान विवरण

ऑनलाइन भुगतान

UPI QR code



8107800000@pz

हमारा पता

राजस्थान टुडे



बी-4, एम आर हाईट्स,
भास्कर सर्कल, रातानाडा,
जोधपुर- 342011

संपर्क जानकारी

वाट्सएप नंबर : +91 8107800000
ईमेल : rajasthantoday@gmail.com

धन्यवाद,
राजस्थान टुडे टीम

RNI No.- RAJHINDI/2020/11485

सदस्यता के लिए आवेदन करें : यदि आप हमारी मासिक समाचार पत्रिका के लिए सदस्यता लेना चाहते हैं, तो कृपया इस प्रपत्र को भरें और हमारे WhatsApp नंबर पर भेजें। हम आपको जल्द ही अपनी पत्रिका के साथ जोड़ देंगे।

नव शिक्षा समाज कार्यकारिणी की ओर से दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं

शुभ
दीपावली



श्री गिरीश माथुर
अध्यक्ष

श्री ओमप्रकाश माथुर
'ओममा, उपाध्यक्ष

श्री सुरेश माथुर
मनोनीत उपाध्यक्ष

श्री दीनदयाल माथुर
सचिव

श्री निर्मल माथुर
कोषाध्यक्ष

श्री सुनील माथुर 'दाउ'
संयुक्त सचिव

श्री कैलाश स्वरूप
माथुर, सदस्य

श्री दीपक माथुर
सदस्य

श्री मनीष माथुर
सदस्य

श्री कपिल माथुर
सदस्य

श्री सुनील माथुर
मनोनीत सदस्य

श्री कमलेश माथुर
मनोनीत सदस्य

श्री आनन्द माथुर
मनोनीत सदस्य

MGH ROAD, JODHPUR

श्री ललित माथुर
मनोनीत सदस्य



**Shri
Mishrilal
Hotel**

घंटाघर का हेरिटेज और स्वाद अब बासनी में भी



15 अक्टूबर 2025

www.shrimishrilal.com

सरस्वती नगर, बासनी में...

स्वाद और परंपरा का संगम-घंटाघर से सीधे बासनी तक

जोधपुर खत्री समाज की शान — 98 वर्षों से सेवा और स्वाद की परंपरा! श्री मिश्रीलाल होटल शताब्दी वर्ष की ओर अग्रसर

लोकल से ग्लोबल की उड़ान जारी है जोधपुर के सरदार मार्केट गिर्दीकोट की हलचल में एक नाम ऐसा है, जो समय के साथ और भी सुगंधित हुआ — श्री मिश्रीलाल होटल। जिसे कभी घंटाघर या क्लॉक टॉवर के पास की छोटी-सी मिठाई की दुकान के रूप में जाना जाता था, वही आज जोधपुर की पहचान, स्वाद और परंपरा का प्रतीक बन चुकी है। लगभग 98 वर्षों से चलती आ रही यह स्वाद-यात्रा, केवल मिठाइयों या लस्सी तक सीमित नहीं, बल्कि एक जोधपुरी भावना है जो हर गिलास में झलकती है।

सन 1927 में श्री मिश्रीलाल जी ने ब्रिटिश सरकार के लाइसेंस के साथ एक छोटी सी मिठाई की दुकान शुरू की थी। रबड़ी, घी कचौरी और कोप्टे से आरंभ हुआ यह सफर तब और भी खास हुआ जब दुकान पर इंग्लैंड से आयातित सोडा-शरबत बिकने लगे। उस दौर में मिठाई और पेय का यह अनोखा संगम जोधपुर के लोगों के लिए कुछ नया था — और यहीं से मिश्रीलाल नाम का जादू शुरू हुआ।

1960 में जब श्री मिश्रीलाल जी के पुत्र श्री राधेश्याम जी ने

व्यवसाय संभाला, तो उन्होंने स्वाद को एक नई ऊँचाई दी। उन्होंने जोधपुर को दी एक ऐसी लस्सी, जो आज 'राजस्थान का गौरव' बन चुकी है — माखनिया लस्सी। यह लस्सी केवल पेय नहीं, एक अनुभव है। घना दही, केवड़ा, इलायची, दूध और चीनी के संगम से तैयार यह लस्सी हर घूँट में जोधपुर की मिठास और परंपरा का एहसास कराती है।

तब से लेकर आज तक यह परंपरा मोरवानी परिवार की चार पीढ़ियों ने आगे बढ़ाई है। श्री राधेश्याम जी अरोड़ा से लेकर राजेंद्र अरोड़ा और अब चौथी पीढ़ी के संदीप अरोड़ा व वरुण अरोड़ा तक — सभी ने इस नाम को केवल संभाला नहीं, बल्कि और ऊँचा उठाया है। गुणवत्ता, स्वच्छता और ताजगी के सर्वोच्च मानकों को बनाए रखते हुए उन्होंने यह सिद्ध किया कि विरासत वही है, जो हर पीढ़ी में नया स्वाद दे जाए।

आज श्री मिश्रीलाल होटल केवल जोधपुर की नहीं, बल्कि दुनिया भर के स्वाद प्रेमियों की पसंद है। शहर का हर निवासी और हर सैलानी जब घंटाघर आता है, तो मिश्रीलाल की माखनिया लस्सी उसका पहला ठिकाना बन जाती है। यह वही स्थान है जहाँ

परंपरा और स्वाद, सादगी और सम्मान एक साथ मिलते हैं।

और अब, 98 वर्षों की इस गौरव यात्रा में जुड़ रहा है एक नया अध्याय।

आपकी अपनी पसंदीदा जगह — श्री मिश्रीलाल होटल — अब अपनी नई शाखा के साथ सरस्वती नगर, बासनी में भी खुलने जा रहा है। यह नया ठिकाना उसी मूल स्वाद, उसी स्नेह और उसी आत्मीयता के साथ आपकी सेवा के लिए तैयार है।

इस नई शाखा का भव्य शुभारंभ 15 अक्टूबर को होने जा रहा है —

जो न सिर्फ मिश्रीलाल परिवार के लिए, बल्कि पूरे जोधपुर के लिए गर्व का क्षण है।

खत्री एकता समाचार पत्र इस ऐतिहासिक अवसर पर मोरवानी परिवार को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता है।

आपके 98 वर्षों के स्वाद ने जोधपुर की पहचान को वैश्विक स्वाद बना दिया — यही है असली जोधपुर की मिठास, यही है मिश्रीलाल की परंपरा।

श्री मिश्रीलाल होटल — जहाँ हर घूँट में बसता है जोधपुर का दिल!